भक्ति-रस

लेखक

सुरेश चौधरी ‘इंदु’

शुक्तिका प्रकाशन

भक्ति-रस

BHAKTI RAS *By* **Suresh Choudhary 'Indu'**

ISBN : 978-81-998530-1-0

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन
माइंडस्टार वेलनेस प्राइवेट लिमिटेड
24, हरिंगटन मेंशन
8, हो ची मिन्ह सारणी, कोलकाता-700071
email : ritzoff@gmail.com
मो. : +91 82409-61596

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

© सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित

मूल्य : 300/-

संस्करण : 2026

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

प्राक्कथन
भक्ति-रस

मनुष्य के जीवन में कुछ शब्द केवल शब्द नहीं होते—वे स्मृतियों की ध्वनि बन जाते हैं। भक्ति ऐसा ही एक शब्द है। यह केवल पूजा-अर्चना या धार्मिक अनुष्ठान का विषय नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतर्मन की वह निर्मल अनुभूति है, जो उसे उसके मूल स्वरूप से जोड़ती है। जीवन के संघर्षों, विषादों, अभावों और आत्मिक खोजों के बीच जो शक्ति मनुष्य को भीतर से संभालती है, वही भक्ति है।

मेरी यह नवीन कृति '**भक्ति-रस**' वस्तुतः 125 भजनों का संग्रह है, परंतु मेरे लिए यह मात्र एक पुस्तक नहीं, बल्कि स्मृतियों, संस्कारों और आत्मिक अनुभूतियों की एक दीर्घ यात्रा का परिणाम है। यह मेरी साहित्यिक साधना की बयालीसवीं पुस्तक है, किंतु इसकी जड़ें मेरे बचपन की उन स्मृतियों में समाई हुई हैं, जिन्हें समय भी धुंधला नहीं कर पाया।

सन् 1962 में मेरी पूज्या माताश्री की एक पुस्तक '**भक्ति-रस**' प्रकाशित हुई थी। उस समय मैं बहुत छोटा था—शायद आठ या दस वर्ष का। परंतु उस पुस्तक के निर्माण से जुड़ी स्मृतियाँ आज भी मेरे मन में उतनी ही जीवंत हैं। उस युग में प्रकाशन की प्रक्रिया आज जैसी सहज नहीं थी। प्रेस से जब फरमे आया करते थे, तो उन्हें बड़े मनोयोग से पढ़कर त्रुटियाँ सुधारी जाती थीं। उन पृष्ठों को हाथ में लेकर अक्षरों को पहचानना, संशोधन करना और फिर उन्हें व्यवस्थित करना मेरे लिए किसी खेल से कम नहीं था।

मुझे आज भी स्मरण है—तीन किलोमीटर दूर स्थित डाकघर तक साइकिल से जाकर पार्सल भेजना। छोटी आयु में वह कार्य मेरे लिए एक उत्तरदायित्व जैसा था, परंतु उसी प्रक्रिया ने मेरे भीतर पुस्तक, शब्द और साहित्य के प्रति एक गहरा अनुराग भी उत्पन्न किया। शायद मुझे तब ज्ञात नहीं था कि वही बालक एक दिन स्वयं अपनी अनेकों पुस्तकों का सर्जक बनेगा।

मेरी माताश्री की उस पुस्तक '**भक्ति-रस**' को पाठकों ने अत्यंत स्नेह दिया था। उसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए और उसने घर के वातावरण को भक्ति, संगीत और आध्यात्मिकता की मधुर आभा से भर दिया। आज जब मैं अपनी इस पुस्तक का नाम भी '**भक्ति-रस**' रख रहा हूँ, तो यह केवल एक साहित्यिक निर्णय नहीं है; यह अपनी माँ की स्मृति और उनके आध्यात्मिक संस्कारों को श्रद्धापूर्वक नमन है।

यदि मेरी लेखनी में कहीं श्रद्धा का स्वर है, कहीं करुणा की लय है, कहीं समर्पण का भाव है, तो उसका प्रथम स्रोत मेरी माताश्री ही हैं। यह पुस्तक उन्हीं की स्मृति को समर्पित है।

इस संग्रह के भजनों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें सगुण और निर्गुण—दोनों धाराओं का समन्वय है। कहीं कृष्ण की माधुर्य-लीला है, कहीं राम की मर्यादा, कहीं शिव का वैराग्य, कहीं माँ शक्ति की करुणा और कहीं उस निराकार, अनंत सत्ता का ध्यान, जिसे शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता। मेरे लिए भक्ति किसी एक पंथ या मत की सीमित परिभाषा नहीं, बल्कि आत्मा की सार्वभौम अनुभूति है।

इन भजनों की रचना विविध छंदों में की गई है। छंदबद्धता भारतीय काव्य-परंपरा की आत्मा रही

है और मेरा सदैव प्रयास रहा है कि भक्ति का संगीत शब्दों की लय में भी स्पंदित हो। पदावली शैली में रचित मेरी दो पृथक कृतियाँ—‘**इंदु कृष्ण पदावली**’ तथा ‘**इंदु पदावली निर्गुण**’—पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनसे भिन्न है, क्योंकि इसमें भक्ति के विविध स्वर छंदबद्ध भजनों के माध्यम से अभिव्यक्त हुए हैं।

आज का समय बाह्य उपलब्धियों का समय है, किंतु मनुष्य का अंतर्मन पहले से अधिक व्याकुल और अकेला दिखाई देता है। ऐसे युग में भक्ति केवल मंदिरों या भजनों तक सीमित नहीं रहती; वह आत्मा का आश्रय बन जाती है। जब जीवन के सारे तर्क मौन हो जाते हैं, तब भक्ति ही वह स्वर बनती है, जो मनुष्य को भीतर से आश्वस्त करता है।

इन भजनों में कहीं विनय है, कहीं विरह, कहीं उत्सव, कहीं आत्मसमर्पण। ये रचनाएँ किसी प्रदर्शन की भावना से नहीं लिखी गईं; ये वे क्षण हैं जब मन ने अपने आराध्य से संवाद किया। यदि इन भजनों को पढ़ते समय किसी पाठक को अपनी अनुभूतियों की प्रतिध्वनि सुनाई दे, यदि उसके मन में क्षण भर के लिए भी शांति और श्रद्धा का भाव जागे, तो मैं अपनी साधना को सफल मानूँगा।

मैं उन सभी पाठकों, मित्रों और संगीत-प्रेमियों के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरी पूर्ववर्ती कृतियों को स्नेह और सम्मान दिया। विशेष रूप से मैं अपनी माताश्री की पुण्य स्मृति को प्रणाम करता हूँ, जिनकी ‘**भक्ति-रस**’ की ज्योति आज भी मेरे अंतर्मन को आलोकित करती है।

यह पुस्तक उसी ज्योति का विनम्र विस्तार है।

—सुरेश कुमार चौधरी ‘इंदु’

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी

दिनांक : 10 मई, 2026

अंतरराष्ट्रीय मातृ दिवस

अनुक्रमणिका

सगुण-निर्गुण भजन

1. वीणा विभूषित करे पद्मासन स्थिते, देवी श्वेताम्बरी 13
2. अज्ञान के इस तमस में अनजान सा मैं सृजन था 14
3. अंजनी सुत हनुमान बजरंग बली आय कृपा करियो रे 16
4. अंतस के इस तिमिर कक्ष को आभासित नाथ कर दीजिये 17
5. अँखियाँ तरस रही बरसों से, सांवरे तुझे पाने को 18
6. आसक्ति-विरक्ति से हो रहा विस्तृत आत्म-साक्षात्कार 19
7. आस्था प्रतिपादित होती अनुष्ठान-मंच पर शांति हेतु 20
8. ओ प्रभु मेरे श्याम मेरे गोविन्द मेरे भगवंता 21
9. इस पार माया का संसार, उस पार तारण हार 22
10. ईश तुम्हारे चरणों में शीश नवाने आया हूँ 23
11. कलामूर्ति कालअग्नि जैसे, देव कालकण्ठ कालरक्षित 24
12. कपट द्यूत हारी तो क्या, महाबलि पञ्च पति मेरे 25
13. कहें वेद पुराण हैं श्री हरि, सबके ही दीन बंधु कृपालु 26
14. काले मधुप सा रसिया तू और कारी बदरी भरी रात भी होगी 27
15. कोई न राम बिन सहारा राम बिन न कोई गति हमारी 28
16. कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी 29
17. क्यों नेह करे जग से बन्दे, तेरा कोई न ठिकाना है 31
18. गल वैजयंती माल, उन्नत भाल विशाल, टेढ़ी चाल 32
19. गोकुल की ग्वालन डूब गोपाल के गीत में 33
20. गोविंद गोविंद गाती गाती गोपिका गीता हुई 34
21. चतुर्मुख पंचमुख षठमुख या, हो सहस्त्रमुख शेष 35
22. चले आओ कान्हा बात अब, दिल की तुम्हें बतानी है 36
23. चाह नहीं कुछ पाऊँ ऐसा, जो है मेरे नहीं निमित 37
24. चारण को संग लिए कान्हा दाऊ और ग्वाल बाल वन चले 38
25. चाँदनी रात में चाँद के साथ में कालिंदी तीरे 39
26. चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ 40
27. छिपे हो आच्छादित घने मेघों में 41
28. जगदीश सुमति के स्वामी सर्वव्यापी विश्वेश्वर नमन है 42
29. जग स्वामी दिवस का अवसान अगर हो चुका 44
30. जप मधुर नाम परमात्मा का, बलि बलिहारी जाऊँ मैं 45
31. जयति नंदलाल जयति बृजबाल जयति गोपाल सुखकारी 47
32. जन्म मृत्यु के बंधन छूटे, आपत्तियों का हो समापन 48

33.	जेहि को पूजत दिनेश महेश शेष अवतारी	49
34.	जीवन तो एक डगरिया है, सुख दुःख की सुनो रे भैया	50
35.	ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं	51
36.	डाल डाल से पूछ रही	52
37.	तन बिगाड़्यो मन बिगाड़्यो पी पी प्यालो, मिथ्या जगत रस को	55
38.	तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव	56
39.	तरंग ज्यूँ होती सागर से, तरंगित सागर कीजिये	59
40.	तान सुरीली तेरी नटखट, तन मन दे भिगोय	60
41.	तेजस रूप लिए माँ, द्वार मेरे आना	61
42.	तू मीत है काले छली श्यामा बिहारी गैर को	63
43.	तू ही जगत पिता तू ही पूजनीय तू ही गुरुओं के गुरु	66
44.	देख सलोना रूप सांवरे, पांव नाचने लग जाते हैं	67
45.	देख मुख श्याम सुंदर का, भूली निज सुध ये अंखियाँ	68
46.	दामोदर अधर पीयूष पी रही यह वेणु नर हो कर भी	69
47.	दृश्य मनोरम सर मयूरपिच्छ कर्ण कनेर पीत पुष्प धर	70
48.	दृग तेरे मुस्काते और हैं कुंतल घने	71
49.	द्रुमदल कानन में, वृन्दावन में, बरसे प्रेम रस धार है	72
50.	धीर धीर नील नयन, श्यामल बदन, कोमलतन, मंगलम	73
51.	नमामि शंख वज्र चिन्हांकित राघवेंद्र चरण सरोरुह	74
52.	नज़रें लगाये निहार रहा था मचलती लहरों को	75
53.	न जाने भगवान मेरा मुझसे क्यों रूठ गया	76
54.	नवीन नील नीरद शुभकांति, कुञ्चित कच कपोल सोहे	78
55.	नारायण मेरे मन के अविनय का दमन कीजिये	79
56.	नैनन नीर बरस रहे, तुम्हें तकूँ दिन रात	81
57.	निहार रहा था मचलती लहरों की तरह तुझे नजर गड़ाए	82
58.	निज अंतस के उत्कृष्ट अभिमान से	83
59.	निंदिया ले चल मुझे उस जगह, जहाँ मन्मथ से सुंदर श्याम	84
60.	प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल नित नूतन उत्पात मचावे	85
61.	प्रभुजी मेरे अन्तः धीर धरावो	86
62.	प्रभो ऐसा करो की एक हों वाणी व मन मेरे	87
63.	प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल	88
64.	प्रियतम तुम्हारे स्वागत को अंतस दीप एक जलाया है	89
65.	प्रियतम मेरे नैन तरस रहे, बरसों से तुझे पाने को	90
66.	पूजूँ देवि निगम प्रतिपादित, प्रवरातीर निवासिनी तुझे	91
67.	पीछे मूड़ ना देखेंगे वो छोड़न तुझे जो आवेंगे	93

68. फिर मेरे मन को घेरा, छाया दृगों में अँधेरा 94
69. बस गयी हृदय में मनमोहन छवि तेरी प्यारी 95
70. बामन भगवान ने, नापी भूमि पग तीन 97
71. भक्त वत्स हितकारी कृपालु अति सुखकारी नमस्कार 98
72. भजूँ सुबह सुबह परम कल्याण, रूपिणि माँ भवानी को 99
73. मस्तक सुंदर चन्दन शोभित है 100
74. मझधार में कश्ती है और लहरें तूफानी हैं 102
75. मेरे नैनन बसे मधुकर मकरन्द भूपाल मणि श्री राम 103
76. मेरे प्रभु मेरे तो श्याम राधा मोहन घनश्याम 105
77. मेरे स्वामी, मुझ पर कृपा, इतनी तो कीजये 106
78. मैं एक मिलन को प्यासी सरिता की धारा 107
79. मैं दुख की गठरिया राम जी, सुख कैसे मन मेरे लाऊँ 108
80. यशोदा करा स्नान ध्यान सजाया कन्हैया को 109
81. याद में तेरी कटे दिन रैन कैसे सांवरे 110
82. ये हरित छटा ये शीतल मलय समीर 111
83. रघुनंदन प्रभु राजीव नयन, शोभा ज्यूँ कोटि मयन 112
84. रहे कृपा इतनी की सुबह शाम बस रटूँ तेरा नाम 113
85. राम शरण तुम्हारी, आज पड़ा ये भिखारी 114
86. लालिमा लिए क्षितिज संग था, प्रभु तुम अचानक आ गए 115
87. लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले 116
88. वसंत शुद्ध गगन सुंदर उपवन पद्माकर सुरभित लाया 117
89. वाह्य तिमिर दूर करूँ जीवन में यह चाह लिए 118
90. विभाषित विद्युत द्युति सम पीताम्बर लावण्यवान है 119
91. विरहानल में यूँ जली, जैसे जले पतंग 120
92. विश्व के पालनकर्ता दयानिधान कृपालु नमन आपको 122
93. शंख चक्र कृपाण त्रिशूल मैया के हस्त शोभित हो रहे 123
94. शिशिर रात्रि की शीतता जब कालिमा ले गहराती है 125
95. श्याम तुम्हारे दरस जो व्याकुल कोपल तरु पर शकुन्त हैं 126
96. श्याम रंग में रंग्यो पंक्षी, तन मेरो मन बिसरावे 127
97. हम जीव सदा करते मनमानी 128
98. हर्ष विषाद के अज्ञान से, दे दो प्रभु ज्ञान हमें 130
99. हे गोविंद! हे गोपाल!! कृपा करो 131
100. हे परम पिता परमेश्वर दे मानव जन्म किया कृतार्थ 133
101. हे कृष्ण कन्हाई कुंजबिहारी केशव कमलकांत किशोर 134
102. हे नाथ जगदीश्वर भृंग हो, या नीलकण्ठ विराट हो 135

103. हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल	136
104. हे प्रभु मैं सुन कर सुनता हूँ, हर बार देख कर देखता हूँ	137
105. हे गोपाल! हे नंद लाल! मुरलिया वाले आजा	138
106. हे प्रभो इतनी कृपा कर दीजिये	139
107. हे देव दिवाकर कर दो शिशिर निशा काल का अंत	140
108. हे नाथ सृष्टि के स्वामी और स्वयं आप ही हो विधाता	141
109. हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा	143
110. हे अनुपम तेजोमयी जगद्माता	144
111. हे गुरुदेव कृपया ब्रह्म मर्म का ज्ञान लक्ष्य दीजिये	146
112. हिवड़ो मेरो झूम झूम, अब आनंद मनावे	147
113. सखी निरख आनंद वर्धन करते शीलवान हरि रूप को	148
114. सत्य चित्त आनंद का परम हंस परम ज्ञान ईश हैं	149
115. सप्त श्वेत तुरंग रथ आरूढ़, देव प्रभाकर नमन तुझे	150
116. सर्व दाता सर्व ज्ञाता सर्व व्यापक है	151
117. संबंध स्वार्थ निहित हो गए, कलुष तत्व से ग्रसित हो गए	152
118. संकल्प शक्ति दो जीवन को, खोल दे मन की अर्गलायें	153
119. सामर्थ्य कहाँ मुझमें इतनी, कर सकूँ ब्रह्म का वर्णन	154
120. सांध्य अर्घ्य का समय हो चला, हरि स्वीकार मेरी याचना	155
121. सुनो रे मनवा सुमर ले तू राम का नाम	156
122. सुंदरी सूरा और सुरभि सुख को शांत विराम देने को	157
123. स्वागत में जिसके हो प्रसन्न	159
124. स्वप्न मधुर माधव के खोलें, हृदय की अर्गलायें	161
125. क्षत क्षत क्षरित देह रोग ग्रस्त, वेदना कीजिये निस्तार	163
126. कवि परिचय	165

❖❋❖

1

वीणा विभूषित करे पद्मासन स्थिते, देवी श्वेताम्बरी।
श्वेत हंस आरुढ़, बुद्धि प्रदायनी, माँ कोकिल कादम्बरी॥

नमस्ते नमस्ते माँ आलोकितम मानस, तमस जाड्यांधम।
पूजिते देव त्रय सदा मात शारदा, देहि आरोग्यम, यशम॥

चतुर्भुजी, सस्मित आनन्, वेदधारिणी, ज्ञान संचारिका।
आदि शक्ति, भय निवारणी, कुंद पुष्प, मुक्ताहार धारिता॥

देवि जननी ज्योतिर्मय निर्झरनी, वीणा पुस्तक धारिणी।
ऐश्वर्य दायिनी, नमामि देवि, शुभ्र ज्ञान रश्मि प्रसारिणी॥

2

अज्ञान के इस तमस में अनजान सा मैं सृजन था
पाषाण की अनगढ़ शिला का मैं अनामी रुदन था
दे ज्ञान रूपी ज्योति स्वामी आपने गर्वित किया
हे नाथ आ काटा तराशा आपने सज्जित किया

आये प्रभा बन ज्ञान की ज्यूँ हो शरद का आगमन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

जग ने दिखा लीला भयावह जब मुझे विचलित किया
तब धैर्य दे साहस दे स्वामी आपने हर्षित किया
मैं ग्रन्थ मीमांसा पढ़ा बूझे पिपासा ज्ञान की
आ आपने इस व्यथित अंतस की निराशा शांत की

सीखा पढ़ाया आपने जो पाठ वो करता मनन

गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

इस भक्तिमय रस प्रेम की अनुपम सुधा पा तृप्त हूँ
ये सत्य परम प्रशांत पा अनुग्रहित और सशक्त हूँ
जब जटिल उद्वेलित हृदय था आपने साहस दिया
स्नेहिल सरित में स्नान कर के भक्ति गंगा पा लिया

इस ज्ञान गंगा में धुला जीवन बना सुंदर चमन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

तन लालसा से ग्रषित था औ वासना ने था डसा
अवसाद के काले जलद से हृदय का नभ था पटा
सुन शांत स्वर को आपके इस तमस का परदा हटा
सर आपके हैं हस्त वरद समस्त यह कल्मष छटा

नभ मेघ आयी प्रीत वर्षा में बहे गुरुवर नयन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

तड़पा बहुत मेरा हृदय किस विधि मिले प्रभु की कृपा
मेरी व्यथा अब क्या कहूँ कुछ भी न तुझसे है छिपा
गुरुदेव आ अंतस बसो दो हर्ष दुःखों को मिटा
आनंद सागर लें हिलोरे कष्ट था सारा कटा

दो शक्ति इतनी मोह एवं कामना का हो दमन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

3

अंजनी सुत हनुमान बजरंग बली आय कृपा करियो रे
राम के भक्त न्यारे सीता के दुलारे दया करियो रे

मार दानव गिराए भक्तन के भय भगाए ज्ञान सागर तुम
लाल देह रक्त नयन संकट हर्ता कपि अनुकम्पा करियो रे

पवन पुत्र हनुमान बजरंग ले सूर्य देव से ज्ञान अपारा
सृष्टि नायक श्री राम को हृदय धार के हम सब को तारा
अतुलित बलधारी सुखकारी चमचम सोना देह मनोरम
आ शरण लीजिये सारे काज सफल कर दीजिये हमारा

करूँ वन्दना हनुमन्त सिय मन बसने वाले जय तुम्हारी
राम जी के भक्त निराले लाल लंगोट वाले जय तुम्हारी
मारुति नंदन जा अशोक वाटिका सिया मन दुख दूर किया
लाय संजीवन लखन जियाये 'इंदु' रखवाले जय तुम्हारी

4

अंतस के इस तिमिर कक्ष को आभासित नाथ कर दीजिये

सूरज की मटमैली किरणें हृदय वृत में कर रही प्रवेश
यह आवृत्ति चक्र अनहत में बिम्बित रेखांकित है विशेष
खोल मनस की अर्गलाएँ प्रस्थान करा अंदर दीजिये
अंतस के इस तिमिर कक्ष को आभासित नाथ कर दीजिये

चमकते धूल कण ज्यूँ सीधी प्रकाश की एक रेखा संग
मानो जीवन एक रश्मि रेखा और धूल-कण बिना ढंग
प्रकाश बिंदु हुआ केंद्रित शीघ्र अंध उर का दूर कीजिये
अंतस के इस तिमिर कक्ष को आभासित नाथ कर दीजिये

दीप ज्ञान का जला हटा कल्मष अंदर का उजास लाईये
ज्योत विश्वास की ले दिया प्रेम का इक उर में जलाइये
'इंदु' बुराईयों का कर विनाश नव प्रकाश मनहर सींचिये

अंतस के इस तिमिर कक्ष को आभासित नाथ कर दीजिये

5

अँखियाँ तरस रही बरसों से, सांवरे तुझे पाने को
आते क्यों नहीं नैनन बीच, जीवन ज्योत जगाने को।

शब्द ढूंढ़ते हैं गीतों को, प्रियतम तुझे मनाने को
आते क्यों नहीं इस जिव्हा पर, गीत प्रीत का गाने को
मत तड़पा कंठ अवरुद्ध हैं, रो रो तुझको पाने को
आते क्यों नहीं नैनन बीच, जीवन ज्योत जगाने को।

आ भी जाओ निर्मोही तुम, प्रेम सरिता बहाने को
बहियाँ बेचैन हो रही है, प्रेमालिंगन पाने को
आ जाओ बाहों में प्रियवर, सुख मिलन का दिलाने को
आते क्यों नहीं नैनन बीच, जीवन ज्योत जगाने को।

देख लालिमा सांध्य गगन पर, विरहन हृदय गति बढ़ चली
'इंदु' अर्ध्य का समय हो चला, पूजन अर्चन को देह चली
ईश तड़प रहा उद्विग्न मन, शरण तुम्हारी जाने को
आते क्यों नहीं नैनन बीच, जीवन ज्योत जगाने को।

6

आसक्ति-विरक्ति से हो रहा विस्तृत आत्म-साक्षात्कार
हो रहा प्रबल वैराग्य भाव-जागृत हृदय योगाकार
नियति प्रकृति परा अपरा के संग जीवन में अवलोकन
आज सकाम कर्म-यज्ञ का करना ही होगा समापन

इस लौकिक जग में अब तो होगा योग-अध्यात्म निरुपित

अनन्य प्रभु कृपा में रहे सदा मेरा जीवन समर्पित
करूँ मन-निग्रह, ध्यान निरूपण, और करूँ इन्द्रिय-दमन
आज सकाम कर्म-यज्ञ का करना ही होगा समापन

पूर्ण ज्ञान का आह्वान करूँ हो सम्पूर्ण विरक्त भक्ति
प्राप्त हो श्रद्धा-स्थिरता नाथ कर दे भजन में आसक्ति
दान-तपस्या ज्ञान-योग विकार त्याग का मनन-अध्ययन
आज सकाम कर्म-यज्ञ का करना ही होगा समापन

सद्विचार मन में उतनी चाह भरण भान होता रहे
भौतिक माया से दूर अहिंसा सत्य ज्ञान होता रहे
धर्म-कर्म-भक्ति का प्रभु आजीवन हो मुझसे निर्वहन
आज सकाम कर्म-यज्ञ का करना ही होगा समापन

7

आस्था प्रतिपादित होती अनुष्ठान-मंच पर शांति हेतु
कर्मबोध आस्था से बाधित होता नहीं यह जीवन सेतु
तिरोहित-अभिलाषा, परिवर्तित-आशा, लाते शुभलक्ष्य है
जीवन परिचय तो संकेतात्मक बिंदु है बस प्राकट्य है।

स्थावर प्रज्ञा आत्म संशोधन को आधार करती प्रदान
जीवन संकलन में उत्कृष्ट निष्कृष्ट विचार एवं ज्ञान
परिचय होता नहीं आत्मा का परिचय है नश्वर तन का
आत्मा परमात्मा एकाकार हैं अन्यथा भ्रम बस मन का।

वारिद बूंदों को तृषित धरा अपरिचित है जल आपूर्ति से
सन्निकट जलधि के रहते पर अपरिचित हैं तृष्णा पूर्ति से
उद्वेलित मन को शांति है अपरिचित, प्रयास को है भ्रान्ति
क्रोधित मन को क्षान्ति, रोगी देह को अपरिचित है कांति।

मेरा प्रभु मुझसे परिचित, नहीं चाहिए मुझे और परिचय
आत्म-संतुष्टि हो, अंतस हो शांत, प्रेम निवास हो निश्चय
सद्बुद्धि का प्रवेश हो, दंभ अनीति खल न कदापि कतिपय
आनंद हो, उमंग हो, जीवन व विश्वास का हो समन्वय।

8

ओ प्रभु मेरे श्याम मेरे गोविन्द मेरे भगवंता
तू ही अनादि तू ही अगोचर तू ही अमर अनन्ता
नारायण निराकार निरंतर निर्गुण निर्मल नियंता
भज मन गोविन्द गोपाल मधुसूदन माधव ब्रज कन्ता

पुकार पुकार थका मैं तो सुना सुना दर्द मेरा थका
सुबह न हुई इस रात की मन मेरा बस चूका चूका
हार गया मैं तो राह देख देख प्रभु जीवन प्रयन्ता
भज मन गोविन्द गोपाल मधुसूदन माधव ब्रज कन्ता

मेरे प्यारे प्यारे सुंदर सुंदर प्रभु श्याम अविराम
दरस दे दो गिरधारी बनवारी ओ नैनों के राम
हर लो कष्ट सारे सृष्टि के रचयिता ओ दिग दिगन्ता
भज मन गोविन्द गोपाल मधुसूदन माधव ब्रज कन्ता

9

इस पार माया का संसार, उस पार तारण हार
बीच भँवर फंसी है नैया, जाना है परलि पार
सुत, दारा, बंधू खींचे है, मोह वश कर उद्धार
प्रभु नारायण पार करा दे, मैं जपूँ बारम्बार।
इस पार.....

करम किया ना कोई ऐसा, जो हो कृपा तिहारी
फिर भी कहाओ पतित पावन, स्वामी कुञ्ज बिहारी
उद्धार करो मेरा भी तो, अब आकर गिरधारी
जीवन तो है आना जाना, हो तुम्ही प्राणाधार।
इस पार.....

कृपानिधान तुम्ही विरल अतल, मैं हूँ पापाचारी
अर्चन के भेद कई जाने, मान तुझे अविकारी
लिए सहज सुन्दर छवि मन बस, परम ब्रह्म अवतारी
वारि क्षितिज अनल अनिल मृतिका, से बने ये नवद्वार
इस पार.....

10

ईश तुम्हारे चरणों में शीश नवाने आया हूँ
श्रद्धा के सुमन सजाकर थाल पूजा की लाया हूँ
भक्ति समर्पित करने को भावों के गीत गाया हूँ
निष्काम भावना लिए अर्चना करने आया हूँ

दीन दुखी के काम आ सकूँ कृपा इतनी कीजिये
असहाय का सहारा बनूँ सामर्थ्य ये दीजिये
सदा ही दिया आपने अब और अर्ज सुन लीजिये
दुनिया में बाँट सकूँ खुशियाँ करुणा ये कीजिये

नाथ शरण तेरी हूँ इस पार करो या कर उस पार
पाप बहुत किये हैं मैंने अब आया तेरे द्वार
तू ही जगत का मालिक तू ही जगत का तारणहार
'इंदु' की नैया के खिवैया तेरी महिमा अपरम्पार॥

11

कलामूर्ति कालअग्नि जैसे, देव कालकण्ठ कालरक्षित
नीलकण्ठ विकराल नेत्र हैं, अत्यंत निर्मल उपद्रव रहित
पदाम्बुज युगल शीश झुकाए, तेरा करूँ कोटिशः वंदन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

वामदेव महादेव जग्गुरु, विश्वनाथ नाम धरणकर्ता
सुर नर मुनि पूजित आराध्य, जगत स्वामी सर्व दुखहर्ता
वृषभचिन्ह जिनकी पताका, महादेव अभ्यंकर को नमन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

ओम शांत अनन्त अविकारी, प्रणम्य रूद्राक्ष माला धारी
सर्व दुःख हारी त्रिपुरारी, नमामि शिव शम्भु जटाधारी
परमानंद केवल्यं रूप, मोक्ष प्राप्ति के कारक भगवन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

12

कपट द्यूत हारी तो क्या, महाबलि पञ्च पति मेरे
धैर्यवान अति शूर वीर, तनिक क्षति न होने देंगे
शोभित यह राज्यसभा हैं, धर्म धुरी धारक समर्थ
भीष्म पितामह आचार्य, होने ना देंगे अनर्थ

सोच रही थी यज्ञसैनि, क्रूर दुःशासन ने देखा
बढ़ आगे खींची सारी, भय द्रुपदसुता अनिमेषा
व्याकुल हुई भय आक्रांत, बलहीन जान सब प्रियजन
भूल गयी विश्वास मन का, हाथ उठा पुकार भगवन

आर्तनाद द्रौपदी करे, रक्षा करो रक्षा करो

कृपालु कृष्ण रक्षा करो, दयालु कृष्ण रक्षा करो
प्रेम विश्वास अक्षुण्ण रख, सुन पार्थ प्रिया की पुकार
'इंदु' कष्ट हारी मुरारि, रक्ष कर वस्त्र वेश धार

13

कहें वेद पुराण हैं श्री हरि, सबके ही दीन बंधु कृपालु
भक्त ने जिस भव से सुमरा, उस भाव से मिल गये दयालु
देखि दशा दीन सुदामा की, तन्दुल खाया दुख निवारण को
दे देइ संपति भार्या को, पूर्ण करि अभिलाष तारण को

गजपति कष्ट मिटायो आ कर, ग्राह ने जब जकड़यो वाको
कूद गरुड़ से दौड़े आये, तत्काल ही बचायो ताको
समस्त कला के अवतार वे' गुण निधान गुरु सुत उद्धारक
संदिपनि को दी गुरुदक्षिणा' मृत पुत्र के वन प्राण दायक

द्रुपद सुता जब टेर लगाई, गोपाल दौड़े चले आये
चीर बढ़ायो लाज बचाई' भक्तन तारण हार कहाये
प्रभो भक्त वत्सल पतिपावन', हे माधव मेरी भी सुनियो
कष्ट मिटाओ 'इंदु' देह का, दया कर शीघ्र शरण लीजियो

14

काले मधुप सा रसिया तू और कारी बदरी भरी रात भी होगी
रिमझिम रिमझिम सावन और गरजती सी बरसात भी होगी
वे कुमुदनी की कलियाँ, मधुबन शाखाओं पर बहार भी होंगी
यमुना जी का किनारा, कदम्ब की वो सज्जित डार भी होंगी
डार पर एक हिंडोल सजा होगा राधारानीजी सश्रृंगार भी होंगी
आ जाओ श्याम प्यारे झुलने को किशोरी जी तैयार भी होंगी

चितचोर चपल चितवन से तेरी, रस सुधा बरसात भी होगी
कानन घन घनश्याम बदरी में नन्द नंदन की बात भी होगी
कानों में अब मधुर-मधुर रस घोलती वेणु की तान भी होगी
राधा भी होंगी, मोहन भी होंगे और सजी हुई शाम भी होगी
देख छटा श्याम की 'इंदु' मन में प्रेम वृष्टि लगातार भी होगी
कुञ्ज गलियों में, श्रीवृन्दावन धाम नगरी में बहार भी होगी

15

कोई न राम बिन सहारा राम बिन न कोई गति हमारी
राम ही जगत में शरणागत वत्सल राम कलि दोष हारी
अस्तित्व विश्व का राम से काल भुजंग भयभीत राम से
रहे अखण्ड भक्ति राम में जीवन आधार राम नाम से

इंदिरा आनंद भूषित चित्रकूटालय श्री राम नमामि
भक्तों के भय हरते परमानंद स्वरूप श्री राम प्रणामि
त्रिदेव अंश आपके जग के अभीष्ट मनोरथ सिद्ध कर्ता
सच्चिदानंद परमात्मदेव श्री राम नमामि दुःख हर्ता

राम नाम धर्म आधार राम नाम कर्म सार राम अर्थ
राम नाम मोक्ष मार्ग पुरुषार्थ श्रेय है राम नाम समर्थ
रामनाम सुधारस धार रामनाम प्रकृति सत्य एक मात्र
श्रवण राम नाम का जरा मृत्यु भय हरे कहते सर्वशास्त्र

16

कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी,
मन की वीणा झंकृत हो जाये।

कुछ ऐसी धुन रचाओ बनवारी,
मेरे हर गीत अलंकृत हो जाये॥

मन मंदिर में आ जाओ अब गिरधारी,
सुनी अँखियाँ देख रही बाट तिहारी ।
तू है रसिया मैं तेरी प्रेम पुजारी,
मोदित नयन बढ़ाएं तृष्णा हमारी॥

कुछ ऐसा करतब दिखाओ मुरारी,
हृदय वेदना परिष्कृत हो जाए।
कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी,
मन की वीणा झंकृत हो जाये॥

पूर्ण चन्द्र जब अर्ध निशा में होता है,
श्रीधाम जब निश्चिंत होकर सोता है ।
तब रास रचाने आते हो तुम प्यारे,
सर्वांग स्पंदित कर जाते हो तुम प्यारे॥

कुछ ऐसा रास रचाओ श्यामबिहारी,
यह तन तन तरंगित हो जाए।
कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी,
मन की वीणा झंकृत हो जाये॥

दृग तेरे मुस्काते और कुंतल घने
दृढ़ मेरा निश्चय प्रेम सूत्र तू बंधे
चपला टंकित चांदनी लगी नभ चढ़ने
बाल गोविन्द खड़े यहाँ नवनीत सने॥

कुछ ऐसा चमत्कार दिखाओ,
'इंदु' मन भक्ति भाव से परिसृत हो जाये।

कुछ ऐसी मुरली बजाओ गिरधारी,
मन की वीणा झंकृत हो जाये॥

17

क्यों नेह करे जग से बन्दे, तेरा कोई न ठिकाना है
घर बार सब यहीं छूटेगा, देह छोड़ हरि घर जाना है।

कैसी निंद्रा में सोए हो, कब तन्द्रा तेरी टूटेगी
मोह जाल में तू सब भूला, इक दिन तुझसे वो रूठेगी
माया महा ठगनी जान ले, रचती नित नया फसाना है
घर बार सब यहीं छूटेगा, देह छोड़ हरि घर जाना है।

टूटेगा सारा भ्रम तेरा, यम की फाँस फँसा तू होगा
चौथे काल बहुत तड़पेगा, साथ न कोई तेरे होगा
सुत दारा सब सुख के साथी, जग का दस्तूर पुराना है
घर बार सब यहीं छूटेगा, देह छोड़ हरि घर जाना है।

किसकी खातिर अकड़ा प्यारे, किसकी खातिर तू झगड़ा है
घाट तक का साथ सबका है, फिर तो कोई नहीं खड़ा है
केवल हरि नाम ही सत्य है, झूठा जग पहचाना है
घर बार सब यहीं छूटेगा, देह छोड़ हरि घर जाना है।

काया जिसे पहन इतराया, वो भी तो हरि की माया है
छल दम्भ की गठरी पीठ पर, भव सागर पार लगाया है
जग के बंधन ‘इंदु’ तोड़ कर, ईश चरण ध्यान लगाना है
घर बार सब यहीं छूटेगा, देह छोड़ हरि घर जाना है।

18

गल वैजयंती माल, उन्नत भाल विशाल, टेढ़ी चाल

पग नुपूर ताल, ले शरण नन्दलाल है गोपाल केकि भाल
अद्‌भुत आकर्षण, शक्ति प्रदर्शन, पाणी चक्र सुदर्शन
मारे असुर विलक्षण, है श्रद्धा समर्पण, कृष्ण मोहन

तिरछी नज़र कटारी, मनोहारी, अलकें घुंघराली
टेढ़ी अदा बड़ी नखराली, मोर मुकुट छटा निराली
सस्मित आनन, मद पूरित नयन, मोहक अयन पीत वसन
मोदित मन, अकिंचित तन, मधुसूदन राजीव नयन वन्दन

करो कृपा गिरधारी आप बसों मुरारी हृदय मेरे
बरसा रहे आनंद घन शरण आया जब चरण तेरे
ब्रज की रज मलयज को चित्त सहज को नमन करूँ राधे
'इंदु' की भक्ति ले प्रभु शक्ति दे पग पूजन करूँ राधे

19

गोकुल की ग्वालन डूब गोपाल के गीत में
प्राणन से प्यारे पिया प्रीतम की प्रीत में
नटखट नटवर के नखराले निज नवनीत में
मधुवन की मंजरी में मनहर के मीत में।

निहार निहार नैन नैनन के नैन नित में
रसिक रचा रास पिला रसामृत रस रीत में
अच्युत अधर अमृत अनुभूत करा अनीत में
सांवरो साजन सलोनो सताए सीत में।

नशीले कटीले नैन ले चैन बुरो हाल है
केकि कलँगी को किरीट सोहे उत भाल है
बांके बांको खड़ो बांकी बाकी चाल है
'इंदु' मन बिंदु में सिंधु सो इंदु कमाल है।

20

गोविंद गोविंद गाती गाती गोपिका गीता हुई
प्यारे की प्यारी प्रेम प्रीत की प्रतीक प्रणीता हुई
नयन नीर निकले नद नाले' सी बह नवल निशिता हुई
मोहन मोह में' मंजुल मीरा मानिंद मनस्विता हुई

नंद नंदन की नंदिता नील नभ नवल नायिका नई
चंचल चपल चम चम चमकती चन्द्रानन तारिका भई
'इंदु' वदन 'इंदु' की ईशिता ईश हुई इंदुमुखी वो
श्वेत सरोरुह की सितता सङ्ग सांवरे की हुई सखि वो

21

चतुर्मुख पंचमुख षठमुख या, हो सहस्त्रमुख शेष
वर्णित न कर पाए तुम्हारे, कभी गुण अति विशेष
क्षमता न एक मुख बालक में, कैसे करूँ स्तुति गान
इनकी दशा भवानी ऐसी, क्यों कर करूँ अभिमान

रसना ही स्वाद जानती है, घी दूध और दाख
मधु की मधुरता शब्दातीत, प्रयत्न करिए लाख
सौंदर्य तुम्हारा देख सकें, मात्र शम्भु के नेत्र
वेद भी न कर सकते वर्णन, न यह हमारा क्षेत्र

मुख ताम्बुल कज्जल देख नयन, केसर बिंदी भाल
कटि हेमवर्ण साड़ी पहने, शोभित मुक्ता माल
कटि शादी ऊपर रत्न जड़ी, मेखला चमकत भाल
अनोखी वेशभूषा सज्जित, शैलसुते हर त्रास

पारिजात पुष्पहार स्तन पर, वीणा मोहक नाद

सजे हैं कर्ण कुंडल सुंदर, वक्र अँग अभिमाद
गज गामिनी सी चाल मोहक, नेत्र रक्तिम सरोज
आशुतोष भार्या हे उमा, विजयी तेरा ओज

22

चले आओ कान्हा बात अब, दिल की तुम्हें बतानी है

राग हुआ है मुझे किसी से, प्रेम की रीत जानी है
जिसकी नजरों में मैं डूबा, उससे नजर चुरानी है
सुंदर सलोना मुख देख कर, इक जिंदगी बितानी है
चले आओ कान्हा बात अब, दिल की तुम्हें बतानी है

जमना तट पर बंशी वट पर, वेणु की धुन सुनानी है
बृजधाम की कुंज गलियों में, दधि मटकी फुड़वानी है
बृज धेनु वेणु रेणु रास में, बसी तेरी कहानी है
चले आओ कान्हा बात अब, दिल की तुम्हें बतानी है

उम्र हो चली ताकत अब तो, इंद्रियों की जानी है
कैसे नाचूँ पिया संग मैं, अब कहाँ वो रवानी है
पांवों में डाल जान प्यारे, फिर से लगन लगानी है
चले आओ कान्हा बात अब, दिल की तुम्हें बतानी है

23

चाह नहीं कुछ पाऊँ ऐसा, जो है मेरे नहीं निमित
मेरी नियत का मुझको मिले, योग्य दूसरों का वर्जित
स्थावर जंगम बना जगत में, आपका आपको अर्पित
बस कृपा इतनी बनाये रख, लालसा जगे ना अनुचित

नाथ चाह बस इतनी सी है, कर्म करता मैं निरन्तर
कर्म मार्ग बताया आपने, शतायु पा जियूँ तदन्तर
रह मुक्त कर्म बंधन से मैं, धन्य रहूँ हो अभिलाषित
बस कृपा इतनी बनाये रख, लालसा जगे ना अनुचित

जीवन है सुना बहुमूल्यनिधि, समाप्त करना नहीं धर्म
आत्महत्या महा पाप है प्रभु, कदापि नहीं मानव कर्म
मृत्यु पश्चात जाएंगे उस, लोक जो अंध आच्छादित
बस कृपा इतनी बनाये रख, लालसा जगे ना अनुचित

आत्मा तो अचल है फिर क्यों, मन से तीव्र चलायमान
क्यों कर जाती अतिक्रमण ये, पदार्थों का जो गतिवान
मुझे स्थिर कर वायु वर्षा को, कर 'इंदु' इसे संपादित
बस कृपा इतनी बनाये रख, लालसा जगे ना अनुचित

24

चारण को संग लिए कान्हा दाऊ और ग्वाल बाल वन चले
मोहनी सांवली सूरत लगती गल गौ पाश लटक मचले
निरत विरत गौ चारण गौ पालन को वेणु राग संजोया
ब्रज की रेणु में धेनु में बिहारी की वेणु में मन खोया

मोहन की मोहक वेणु तब बजी चेतन जीव सब स्थिर हुए
जड़ स्पंदित रोमांचित हो मुरली से सम्मोहित धीर हुए
श्री हरि के परम गुण क्या गाऊँ उसकी याद में मन रोया
ब्रज की रेणु में धेनु में बिहारी की वेणु में मन खोया

ब्रजांगनाएँ प्रतिदिन वर्णन करती मुरली धुन प्यारी की
तन्मय हो गाथाएं गाती सतत वृन्दावन बिहारी की
मोहन की अद्भुत लीला नित देख 'इंदु' भी नयन भिंगोया

ब्रज की रेणु में धेनु में बिहारी की वेणु में मन खोया

25

चाँदनी रात में चाँद के साथ में कालिंदी तीरे
कैसी बजाई मोहन मुरलिया तूने धीरे धीरे
कान्हा अद्भुत रास रचाये है वृन्दावन कुंजन में
बरसने लगा है मधुर सुधारस भी पावन मधुवन में

शरद निशा में खिले चाँद में मनमोहन की छवि भाई
प्रेम मंदिर की मैं पुजारन थाल पूजा का भर लाई
मनहर ने ऐसी बंशी बजाई, सुध बुध खो चली आयी
मैं बावरी ब्रज ग्वालन सकल लोक लाज ठुकराई

श्याम तुम क्या जानो वेदना प्रीत की क्या होती है
छलिये तुम क्या जानो कशिश विरह की क्या होती है
खेल रचाते हो 'इंदु' मन लुभाते हो पास बुलाते हो
न जाने कहाँ छुप जाते हो क्यूँ इतना तड़पाते हो

चले आओ रसिया तुम बिन जीवन सुना सुना सा है
नींद कहाँ चैन कहाँ अब सब कुछ छिना छिना सा है
आकर चैन दिलाओ दर्शन कराओ मोहनी सूरत
नैन मूंदें 'इंदु' लखे मन मन जुगल किशोर की मूरत

26

चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

अरुणोदित नव भोर है उत्सव है सज़ा सज़ा
आशाओं का उदय और तिमिर है भगा भगा

उमंग आल्हाद का लाती आरव रवि-रश्मियाँ
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

गत वर्ष की भूल कर रीति बात नव वर्ष आया
आनंदित प्रफुल्लित उन्मुदित मन को हर्षाया
सागर तट पर हेम कण का वैभव रवि-रश्मियाँ
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

पूर्ण होंगी अपूर्ण आशा मन संकल्प है आज
लक्ष्य संधान होगा नव वर्ष प्रकल्प है आज
जीवन उजास कर रही हैं आर्जव रवि-रश्मियाँ
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

नव चेतस नव उजास नव कल्पनाएं नव वर्ष
छोड़ कल्मषता कटुता उमंग लाया नव वर्ष
संस्कारित ज्योति अंतस प्राभव नव रवि रश्मियां
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

27

छिपे हो आच्छादित घने मेघों में
तारागणों के अंतर्निहित प्रकाश
लुप्त कैसे होगा न होगा समाप्त
अस्तित्व तुम्हारा टिमटिमाते भास
ओ टिमटिमाते भास.....

क्षणिक भूल सकता नाथ अंतर्मुखी
तेरे तेजोमयी स्वरूप की आस
ज्ञान की आभा से न कर दूर प्रभु
अस्तित्व तुम्हारा टिमटिमाते भास
ओ टिमटिमाते भास.....

अहंकार रूपी ग्राह ने जकड़ रखा
संसार सागर ने हमें पकड़ रखा
गजराज बना मैं मोह में फंसा हूँ
विश्व का समस्त मोह रूप अहसास
ओ टिमटिमाते भास.....

संबंधों का भौतिक कर्म निष्काम
'इंदु' अज्ञानता का करो निवारण
यथोचित फलों का अनुष्ठान कारण
अज्ञान तिमिर छंटने का हो प्रयास
ओ टिमटिमाते भास.....

28

जगदीश सुमति के स्वामी सर्वव्यापी विश्वेश्वर नमन है
अनादि अनंत प्रकृति पुरुष परम पावन परमेश्वर नमन है
प्रणत दास अति कामी शरणागत आया हूँ उद्धार करो
दीनदयाल दीनानाथ भव संकट से अब निस्तार करो

गुणहीन सुदीन मलिन मेरी मति रक्षक दाता सम्मुख हूँ
गुणगान करूँ नाथ राजस वृति दास पापियों में प्रमुख हूँ
मरुभूमि मीन भाति तड़पूं वारिद बूंदों की बौछार करो
दीनदयाल दीनानाथ भव संकट से अब निस्तार करो

जगनिवृति निवारक कर्मविस्तार के कारक कल्याण करो
जग उदधि नीर में डूबा संतप्त जीव प्रभु आ प्राण भरो
करुणा रूपी नौका ला शीघ्र दुखिया पार संसार करो
दीनदयाल दीनानाथ भव संकट से अब निस्तार करो

हे पुनरुचे मेरी पाप राशि भार से धरा परिपूर्ण है
मुझसा नीच अति निन्दनीय नगण्य पापी सदा अपूर्ण है
है पापराशि के विदीर्णक दास के कर्म का प्रतिहार करो

दीनदयाल दीनानाथ भव संकट से अब निस्तार करो

अच्युत चिन्मय उदारचूड़ामणि ज्ञान रूप प्रभु कृपा करो
अत्यंत तृषित मोह वशीभूत पातक हूँ मुझ पर दया करो
'इंदु' जन्म मरण के कारणभूत को नमन बारम्बार करो
दीनदयाल दीनानाथ भव संकट से अब निस्तार करो

29

जग स्वामी दिवस का अवसान अगर हो चुका
नभ पर मनहर विहग गान भी हो रुका रुका
शीतल अनिल प्रवाह भी चलचल थक चुकी हो
निशीथ तिमिर के आलिंगन में आ चुकी हो

डाल देना मेरी देह पर यह तिमिर पटल
जैसे ढका तूने निंद्रा चादर से भूतल
जैसे बन्द किया शतदल पंखुड़ी शाम को
जैसे लौटे गोधन गोधूलि निज धाम को

पथिक की सामग्री तो समाप्त हो चुकी प्रभु
यात्रा आरम्भ से पूर्व ही यात्रा रुकी प्रभु
वस्त्र फ़टे हैं शक्तिहीन इस पथिक के नाथ
लाज एवं दरिद्रता दूर करो कर प्रमाथ

मेरे जग्गनाथ सर्व शक्तिशाली हो आप
खिलाये पुष्प आपने अनेकों हर संताप
रात्रि की इस छांव में आया है नाथ 'इंदु'
एक नवजीवन प्रदान करो मुझे शरदेंदु

30

जप मधुर नाम परमात्मा का, बलि बलिहारी जाऊँ मैं
और सत्संग कर भव सागर से, स्वामी तर जाऊँ मैं
पूरी हो अभिलाषा पद रज, तो सन्तन की चाहूँ मैं
हे नाथ कृपानिधान तेरी, कृपा खूब बस पाऊँ मैं

जीवनदाता जीवन देता, तो फिर क्यों घबराऊँ मैं
तू पालक रक्षक जनक नाथ, तुम बिन कैसे जाऊं मैं
तू जीवनाधार जन्म दाता, तेरी शरण आऊँ मैं
सम्भाल सृष्टि के रचियेता, आ जा शीश नवाऊँ मैं

हर प्राणी के मन बसते तुम, तू सच्चा पालनहारा
कब कैसे आ तू कृपा करे, कैसे आ मिले सहारा
कोई पहचान न सका तुझे, कोई ना कीमत जाना
सांस रहे जब तक इस घट में, मुझे प्रभो तू अपनाना

प्रभो सर्व कला सम्पूर्ण तू, अकथनीय अगोचर कहाँ
है यह प्राण यह देह तेरी, अब यह मेरी रही कहाँ
तेरी मेहरबानी ओ प्रभु, देती सुख सदैव मुझको
तेरी कृपा से जगत स्वामी, प्रेम करूँ सदैव तुझको

लोक परलोक का स्वामी तू, तू पावन जग रखवाला
अद्भुत रूप चमत्कारी है, सब कष्ट मिटाने वाला
कौन जानता लीला तेरी, ज्ञान दीप जले तिमिर में
कृपालु दयालु पालनहारा, तू कृपा आतप मिहिर में

अहिर्निश स्मरण करता जो भी, शीघ्र कल्याण करते हो
रहा सहारे जो भी तेरे, मृत्यु भी दूर करते हो
गुनाह सभी माफ हो जाते, प्रभु पाकर दर्शन तेरा

बाकी तो सब अल्प समय के, एक नाम सच्चा तेरा

समझ लिया मैंने सच तेरा, तेरा ही गुण गाता हूँ
शाह जगत के परमात्मा को, दिल में खूब समाता हूँ
प्रेम संग सच्चा मालिक तो, तन मन में रच बसता है
उस मालिक के दर्शन का क्या, मोल कभी दे सकता है

हे पावन ईश्वर दीन बन्धु, अतुलनीय अद्भुत स्वामी
कर सहायता हे परमात्मा, तू ही हो अंतर्यामी
हे सृष्टि रचियता जग पालक, 'इंदु' सदा सेवक तेरा
नाथ जगत्पति जगत बनाया, जगत में तेरा बसेरा

31

जयति नंदलाल जयति बृजबाल जयति गोपाल सुखकारी
मुरली धुन मोहन मुख सरोज सुरभि राजत बन बिहारी
श्याम मेघ दिव्य तन पीत पट चंचला इंद्र धनु मोर मुकुट
उर माल कण्ठ मणि चंदन अंग सस्मित भव प्रसन्न विकट।

गोप सखा मध्य त्रिभंगी रूप शोभित मुख मण्डल सुरभि
मन्मथ रूप विश्व पूर्ण काम अम्बुज लोचन शोभा अभि
कुंडल लोल श्रवण मुख मदिर बोल वेणु धुन अनमोल
यमुना तट कल्प तरु मूल सखा संग क्रीड़ा बन्ध हिंडोल।

गोकुल पति गिरधर गुण सागर गोपियन रास रति नागर
आदि सनातन हरि अविनाशी सदा निरंतर उर गागर
पूर्ण ब्रह्म अगम निगम गुण गावें तेहि यशोदा खिलावें
जप तप संयम ध्यान किया पर प्रीत से 'इंदु' प्रभु मनावें।

32

जन्म मृत्यु के बंधन छूटे, आपत्तियों का हो समापन
दक्ष यज्ञ विध्वंसक स्वामी, महादेव त्रिगुणात्मक त्रिलोचन
भुक्ति मुक्ति फल दाता शंकर, सम्पूर्ण पापराशि संहारन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

भक्तवत्सल अक्षयनिधि देव, विश्वस्वामी फिर भी दिगम्बर
भूतपति परात्पर अप्रमेय, उपमा रहित चराचर भयहर
भूमि वारि नभ चन्द्र हुताशन, पालित श्रीविग्रह अनुगमन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

ब्रह्म बन विश्व सृष्टि विधाता, पालनकर्ता बनकर हरि सा
मिटा देते सब सृष्टि प्रपंच, शेष लोक में वास प्रहरि का
गणनायक यूथ संग घिर घिर, विचित्र करते क्रीड़ा नर्तन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

दुख दूर करने वाले रूद्र, जीव रूपी पशुपालक पशुपति
स्थिर रहते हो स्थाणु कहाते, नीलकण्ठ नील चिन्ह सुमति
भगवतीनाथ आप उमापति, हे हर हर शंकर अभिवादन
शरणागत प्रलयंकर के हूँ, मृत्यु भय का हो जाये शमन

33

जेहि को पूजत दिनेश महेश शेष अवतारी।
वो ही दिखावत है ब्रजधाम में लीला भारी।
धन्य धन्य काले कागा तेरी महिमा धन्य।
छीन लेई गयो हाथन रोटी माखन वारी॥

ब्रह्माजी चकराय गए देख ग्वाल संग खेल।

मित्र मूख छाछ भरी दी निज मूख में उड़ेल।
त्रिलोक को स्वामी जूठ रह्यो खाय प्रेमवश।
प्रीत ढंग सिखाय रह्यो चढ़ा प्रेम की बेल॥

चोर कहाय रह्यो वो अहिर की छोहरियन सु।
माखन लिए कान पकड़ाय रह्यो ग्वालन सु।
जेहि से समस्त जग चालत वो आज नाचे है।
नचावत है ब्रज बाला नाचे वो दिखावन कु॥

वो तो कालो, चोर, झूठो, बंशी बजैया है।
कन्हैया नटखट ब्रज गलियन को नचैया है।
मार पाथर मटकी फोड़े कुच्मादी घनो है।
जैसो भी है आपनो है 'इंदु' मन बसैया है॥

34

जीवन तो एक डगरिया है, सुख दुःख की सुनो रे भैया
एक डगर सुख की है चलती, दूजी होती दुख की नैया
कभी ऊंची राह चढ़ती ये, तो गहराई कभी उतरती
आसपास की कल्मषता को, आत्मसात कर चलती रहती

भूलती न राह कभी यह तो, चीर सघन वन राह बनाती
उन्मुक्त हृदय को सींच सींच, लाती उजास मन हरषाती
बलखाती सी चलती जाती, मेरे जीवन सङ्ग डगरिया
पांच विकार राह ले अड़चन, छमछम आती नाच गुजरिया

निकट होने का दे अहसास, साकार का निराकार मिलन
गंतव्य डगरिया का विलीन, मानो विचार विहीन है मन
'इंदु' चला इस अनजान डगर, पाने अंतिम जीवन दर्शन
है अंतिम डगर अंतिम स्वास, अंतिम प्रयास अंतिम जीवन

35

ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं।

नैनों से सूखे पत्ते से, झड़ सपने टूट जाते हैं
स्मृति वेदना चीर हृदय सकल, आहत कर दिखलाते हैं
उष्णता भानु की करने कम, वारिद नभ पर बरसाते हैं
निष्ठुर घनघोर घन आ तभी, छोड़ धरा को बढ़ जाते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं।

रूठे पिया को याद कर कर, मोती-जल नैन बहाते हैं
चक्षु भी शुष्क हो जब दर्शन, को चुप अतृप्त रह जाते है
मिलन 'इंदु' बनता शिखर बिंदु, स्वर विरह के स्वतः आते हैं
पूर्ण चन्द्र को निहार चकोर, जब तृषित प्रेम गति पाते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं।

गुंजित भ्रमर जब रस पान को, सरोरुह पर मचल आते हैं
जब सरोज निज बाहों में ले, बन्द कर भृङ्ग तड़पाते हैं
अब तो मिल जा मेरे प्रियतम, अधर दर्शन गीत गाते हैं
नाथ निकल आ पाषाणों से, 'इंदु' भाव अब बिखर आते हैं
ज्यूँ चातक स्वाति-बूँद को तरस-तरस जाते हैं।

36

डाल डाल से पूछ रही,
कालिंदी तट पर ढूंढ़ रही
विरह के मारे नैना कहे पुकार
वापस आ भी जाओ कृष्ण मुरार।

लौट के आ जाओ सांवरिया

फिर से वैसी बजाओ बाँसुरिया
सुध बुध खो जाऊं
झुमु नाचू गाऊं
तू मुझ में, मैं तुझ में हो जाऊं
छेड़ो ऐसा राग बसंती
प्रेम अमिय रस घुले रसवंती
अब भई मैं बावरिया
लौट के आ जाओ सांवरिया।

मोह न हो जिसमें मोहन कहलाता
कितने निष्ठुर हो तुम
ऐ मोहन नाम तेरा ही बतलाता
जब आना ही न था तुझको
प्यार क्यूँ सीखाया
क्यूँ गोवर्धन उठाया
क्यूँ दावानल से बचाया
क्यूँ रचा रास अध्यात्म का पाठ पढ़ाया
नैन हुए पाषाण अब तो
राह तके बारम्बार
वापस आ भी जाओ कृष्ण मुरार।

केशव छोड़ वृन्दावन मथुरा क्या गए
गए तो गए बस आते क्यूँ नहीं
क्या याद नहीं तुझे बंशी का बजाना
क्या याद नहीं तुझे मक्खन का चुराना
क्या याद नहीं तुझे गौवों को चराना
क्या याद नहीं तुझे गोपियों को नचाना
आ देख छलिया
सुनी मटकी को देख माखन कौन चुराए
मधुवन को देख रास कौन रचाए

धेनु स्तन भी शुष्क हो चले राह तेरी देख
नयन जल भी सूख चले राह तेरी देख
जमुना जी पर खड़ी सखियाँ रही पंथ निहार
वापस आ भी जाओ कृष्ण मुरार।

यह श्री धाम वृन्दावन भूमि है
यह प्रेम की नगरी है
यहाँ रज रज में बिखरे प्रीत न्यारी
यहाँ धेनु में, रेनू में, वेणु में प्रेम धुन प्यारी
यहाँ प्रेम ही पूजा प्रेम ही आराधना
मैं हूँ प्रेम पुजारन,
और तू हो साक्षात् प्रेम की प्रार्थना
प्रेम रस में खोया ब्रज सारा
प्रेम रस में खोयी ब्रज नार
'इंदु' पूजे तुझे ले अंसुअन की धार
वापस आ भी जाओ कृष्ण मुरार।

37

तन बिगाड़यो मन बिगाड़यो पी पी प्यालो, मिथ्या जगत रस को
अब जाग प्राणी छोड़ द्वेष अहंकार पी ले प्यालो, प्रेम रस को
प्रेम रस को जी, श्याम रस को, राम रस को

मोह माया से तूने, मैली की चदरिया
जिंदगानी पर क्यूँ आई, काली बदरिया
गुमान तू मत कर, पांच तत्व के चोले पर
इक दिन ढह जायगी, तेरे तन की अटरिया

धन दौलत के पीछे बहुत भाग्यो पी हालो, काम क्रोध रस को

अब जाग प्राणी छोड़ द्वेष अहंकार पी ले, प्यालो प्रेम रस को
प्रेम रस को जी, श्याम रस को, राम रस को

माटी के पुतले माटी में, मिल जायेंगे
महल मालिया तेरे सब, यहीं रह जायेंगे
सांस सांस बसे काम क्रोध, धरे रह जायेंगे
संभल जा प्यारे छोड़, सब प्रभु घर जायेंगे

बहुत कर ली कमाई 'इंदु' अब तो, पी डालो सुधा रस को
अब जाग प्राणी छोड़ द्वेष अहंकार पी ले, प्यालो प्रेम रस को
प्रेम रस को जी, श्याम रस को, राम रस को

38

तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव
प्रीत प्रेम की प्रतिमूर्ति कृष्ण, कैसे झुठलाओगे प्राभव

है जीवन का आधार कृष्ण, समस्त तत्वों का सार कृष्ण
श्रीधाम के कण कण में बसा, यह उन्मुक्त नेह प्यार कृष्ण
वेद संचित ब्रह्म ज्ञान कृष्ण, तेजस सत्य आत्म स्थान कृष्ण
साम का तरंगित गान कृष्ण, है गीता का अभिमान कृष्ण

नेह नीर का समर्पण कृष्ण, है मन की ऊर्जा तो माधव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

देख सको तो देखो उद्धव, उजड़ी सूनी ब्रज गलियों को
रोते मुरझाए उपवन को, मुरझाई अधखिल कलियों को
अश्रुजल बहाती गायों को, जड़वत इन ब्रजांगनाओं को
विरह अग्नि से खाक हुईं जो, विरहणी गोप ललनाओं को

फिर भी तत्व ज्ञान देना हो, देखो कृष्ण प्रेम का वैभव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

क्यों झूठा ब्रह्म ज्ञान लाये, क्यों आश्वासन दिए जा रहे
अथर्व से पवित रास को तुम, झूठे ज्ञान से झुठला रहे
ओ निर्मोही जली को और, ब्रह्म ज्ञान से क्यों जला रहे
प्रेम प्रीत की मधुशाला में, पी ली मय फिर क्यों सता रहे

समस्त वेद उपनिषद पढ़ के, क्या मिलेगा केवल पराभव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

शांत तरंगें कालिंदी की, शांत हुआ शीतल समीर भी
शांत मधुवन की अठ्खेलियाँ, शांत बिलोना छाछ क्षीर भी
शांत कृष्ण बिन बंशी धुन भी, शांत हुए अब केकि कीर भी
शांत ग्वाल बाल का चहकना, शांत हैं जमना का नीर भी

हुआ शांत समस्त वृंदावन, तुम हो मनोहर धीर आर्जव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

देखो ये खग मृग जल थलचर, इनकी व्याकुलता को जानो
कृष्ण दरस की लगी टकटकी, इनकी आँखों में है मानो
देखो गौशाला में गुमसुम, गौमाता को तुम पहचानो
तुम ठ्हरे निर्गुण निर्मोही, पशुओं की पीड़ा क्या जानो

सीख सको तो सीख लो ऊधो, जीवन मोहन बिना न संभव
हमें ज्ञान की बात न समझा, रहते हृदय हमारे माधव
कहती विरहणी गोपिकाएं, हे केशव आ पार लगा भव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

39

तरंग ज्यूँ होती सागर से, तरंगित सागर कीजिये
लक्ष्मीपति वन्दना आपकी, चरणकमल शरण दीजिये

पुण्डरीकाक्ष दमन कीजिये, मन की आकांक्षाओं का
कर दूर उद्दण्डता मेरी, हो शमन वासनाओं का
दया प्राणियों के प्रति उपजे, भव सागर से पार लगे
भय छेदन करे मकरन्द, सच्चिदानंद धार जगे

असुर दनुज हे निकुंज गिरिधर, तरनि सम तेज उलीझिये
लक्ष्मीपति वन्दना आपकी, चरण कमल शरण दीजिये

दामोदर गुण मंदिर सुंदर, मुखारविंद हे गोविन्द
मंदराचल रूप विशाला हरि, ज्ञान सुजान मति कोविन्द
हे करुणामय हे नारायण, स्मृति ज्ञान में आप ही हों
जीवन रूपी सागर मंथन, तल भान में आप ही हो

विनती सुमति अवनीति न करे, महाभय को हर लीजिये
लक्ष्मीपति वन्दना आपकी, चरण कमल शरण दीजिये

40

तान सुरीली तेरी नटखट, तन मन दे भिगोय,
सोच सोच ये बावरा हिया, सुध बुध दिया खोय।
सिर मोर मुकुट कानन कुंडल, सोहे पीत वस्त्र,
बिम्ब अधर मतवाले नैना, तीखे दोउ शस्त्र॥

क्या रंग क्या नशीली चितवन, आनन प्रभा भास,
तेरी हर अदा निराली है, प्रीत है हर सांस।

बांका तू बांकी हर हरकत, बांकी वाकि चाल,
चले है टेढ़ा मेढ़ा सजन, टेढ़ी कर कमाल॥

कटि करधनी कर धर बंसुरी, छैल छबील श्याम,
'इंदु' हृदय झूमे देख छटा, कान्ह की अभिराम।
गोविन्द गोपाल प्यारे, हे मोहन कुमार,
प्रेम पाश में जकड़ रक्खो मुझे, कृष्ण नन्द कुमार॥

41

तेजस रूप लिए माँ, द्वार मेरे आना
मैया तम अंतस का, सूरज बन मिटाना
तेजस....

अंदर सरिता में जब, बाढ़ सी आती है
आशाओं का मर्दन, नित्य कर जाती है
ले वारि मेघ से तुम, छटा प्रिय बिखराना
तेजस....

अन्तर्घट सूखा हो, हृदय पट भूखा हो
स्नेह रीत चुका हो, मनुज मन रूखा हो
घुमड़ घुमड़ नभ घन से, प्रीत जल बरसाना
तेजस....

सपनों के सागर में, भर कल्पना गागर
तुषार आच्छादित मन, खुशियाँ मधुर पाकर
झूम झूम नृत्य करे, प्रकृति पियूष लाना
तेजस....

सुख दुख लहरें आती, आती चली जाती
हेम राशि अम्बुधि तट, मधु छटा बिखराती
सस्मित आनन तेरा, लिए तू मुस्काना
तेजस.....

लिए प्रात की अरुणिमा, संचार हो उमंग
प्रद्युत अवनि आकाश, नूतन प्रकाश संग
जागृत करना अंतस, प्रीत गीत तराना
तेजस....

मात 'इंदु' जीवन में, भरा तेज आपका
समाहित कर आलोक, तम लुप्त प्रलाप का
जीवन की बगिया को, सदा तू हर्षाना
तेजस.....

42

तू मीत है काले छली श्यामा बिहारी गैर को
मूछें भंवरे तुम्हरी ना छूए मेरे पैर को
कुंकूम लेपे हैं मूछें तेरी लगा जो सौत से
ऊरोज से लागा तभी बांहों भरे थे सौत के

ऊधो तु कैसो दूत बन्यो पात्र हांसी को अभी
निष्ठूर कृष्णो ले मजो वहां मथुरा में तभी
कान्हा तजो गोपी जनों ने भंवरे सो धुल सो
हे भंवरे तू चूस लेवे होठ से ज्यूँ फूल को

कैसे बतावें क्यूँ दबाती पैर पद्मा श्याम को
लागे छली बातें चुराये चैन लक्ष्मी नाम को
हे भ्रमरों क्यूँ गा रहे गाथा यदू स्वामीन की

हो चूँकि ये गाथा पुरानी आज तो गोपीन की

हे भ्रमरों जाओ नयी साथी सखी को बोल दो
गाथा उसी की जो हरे पीड़ा सबों की खोल दो
जाओ मिलेगी दान भिक्षा काम इच्छा दाह से
दासी बनी वो नाथ तुम्हारी बिना जो चाह से

पाताल पृथ्वी स्वर्ग की नारी सभी उन्हें मिलें
भोंहे करे टेढ़ी तथा आकर्षित कृष्णा करें
लक्ष्मी करे पूजा जिसे कैसे लगे गोपी भली
हो दीन तो ले ही सको ये श्लोक की नामावली

भौरें तु ना राखो हमारे पैर पा ये माथ तो
जानू सभी बातें तुने सीखा छलावा नाथ सो
आये यहाँ तो दूत हो ले शब्द चालाकी भरे
त्यागा सभी संबंधी को भी, संधि नाही, है धरे

बींधा शिकारी नाइ बाली को निसंकोच तू
कुरुप नारी को किया काहे, मिली वैदेहि जू
राजा बली को काक भांती बाँध तूझे क्या मिला
वार्ता करेंगे श्याम काले की तज प्यारा सिला

होती सुधा सी बाल लीला कर्ण प्यारी आपकी
बूंदें सुधा की पी हरें ताप भौतिकी द्वेत की
वृन्दावन ध्याये पक्षी की भांति त्यागे सांवरा
है दीन से छोड़े सबों को जो हुये थे बावरा

कर शिकारी गीत में विश्वास काले हिरण नार सा
माना कपट पूर्ण शब्दों को, सत्य भरे विचार सा
अनुभव करती काम पीड़ाएं छलिये के नख से हो

छोड़ो बातें अब कृष्ण की, दूत अब कुछ और कहो

काले के मित्र काले भंवरे, भेजा मेरे प्रिय ने
सन्मान करती हूँ तुम्हारा, अब मांगो वर हिय से
कठिन छोड़ पाना मधुर प्रेम, क्यूँ आये ले जाने
उसकी प्रेयसी लक्ष्मी भ्रमर, रहते सदैव माने

43

तू ही जगत पिता तू ही पूजनीय तू ही गुरुओं के गुरु
इस चराचर भव में एक तू ही अनंत प्रभावशाली पुरु
तुम जैसा कोई नहीं सृष्टि में गुरुत्तर कहाँ से लाऊं
देह प्रस्तुत है पद शरण मात्र तुझे ही स्तुतेय मैं पाऊं

मात पिता सुत दारा सम तू ही सहते सब अवगुण मेरे
हरि ऐसा वैसा जैसा हूँ तेरा हूँ अरु तुम हो मेरे

हे सर्व अग्र नमन हे गर्व पृष्ठ नमन चहुँ ओर नमन है
हे अनंतवीर्य हे विक्रम अमित सर्व समावृत अर्पण है
वायु अग्नि वरुण यमराज चन्द्र दक्ष प्रजापति तुम हो
हे प्रपितामह ब्रह्मा है नमन बारम्बार जगपति तुम हो

तुम ज्ञान ज्ञाता विधिविधाता तुम्ही त्रैलोक्यनाथ चितेरे
हरि ऐसा वैसा जैसा हूँ तेरा हूँ अरु तुम हो मेरे

हे विश्वरूप अनेक उदर अनेक हस्त अनेक मुख तुम्हारे
अनादि अनंत न मध्य न अंत हो अप्रमेय पालन हारे
देखता मैं मोह रूप किरिट गदा चक्र शंख पदम् धारे
देदीप्यमान तेजोमय ज्योति सूर्यकांति नयन कजरारे

परम अक्षर परम आश्रय अविनाशी भाल दिव्यता घेरे
हरि ऐसा वैसा जैसा हूँ तेरा हूँ अरु तुम हो मेरे

44

देख सलोना रूप सांवरे, पांव नाचने लग जाते हैं
पीली पीली सरसों फूटे, और पिय मल्हार गाते हैं
तन मन मादक हिलोर सी है, उठती पिक कूक सुनाती हैं
बासंती पवन वेणु धुन में, घुल राग बसंती गाती हैं

कदम्ब डार कालिंदि तट पर, तेरी मीठी मीठी बातें
बहे मलय के शीतल झोंके, और पूर्ण शशि की हो रातें
दूर ढूंढ़ता कुहूकता खग, नभ पर अपना प्यार मुरारी
गोपिकाएं मंगल गा रहीं, बनती वे सुंदर संसारी

चकमक चमके चांदनी प्रभा, विधु लिए बारात तारों की
चन्दा चकोर टुकटुक देखे, गोपी विरह अश्रु भावों की
हिय ठंडक कैसे आन पड़े, बारम्बार 'इंदु' हरि देखूँ
मदमाती सुरभि हो कन्हैया, तेरी जग भरी भरी देखूं

45

देख मुख श्याम सुंदर का, भूली निज सुध ये अँखियाँ
मोहन सस्मित की ज्योत्स्ना, ज्यूँ चन्द्रसी कुमुद कलियाँ
लाज शर्म छोड़ सब चली, कृष्ण प्रेम में दीवानी
चली तो ऐसी चली वे, मानो बयार तूफानी

जादू ऐसा कर डाला, नैन कुछ न देखें अब तो
मीठी मीठी मुस्कान से, बिन मोल ले लिया सबको
सपने भी न रहे मेरे, कब आते कब जाते हैं
नंद नंदन वश में हुई, कितना अब तड़पाते हैं

भृंग द्वय से दो नैन ये, अटक गए सरोज मुख पर

चकोर सी तक रही सखी, अपलक मानो शशि सुखकर
मेरे नयन रुकते नहीं, 'इंदु' दर्शन का है हर्ष
प्रेम सुधा भरे स्थिर खड़े, आनंद दे रहे मणि स्पर्श

46

दामोदर अधर पीयूष पी रही यह वेणु नर हो कर भी
सिंचित भजन साधन है या है कोई पूर्व जन्म असर भी
सुधारस तो संपत्ति गोपांगनाओं की शेष बचे न बचे
सींचने वाली वेणु रस सरिता देह स्पंदित करे न करे

तरुवर हर्षित देख भगवत्प्रेमी स्वजन को अश्रु बहाएं
पुरुष सदृश वृक्ष वेणु से संबंध बना आनंदाश्रु सजाएं
ब्रजधरा पृथ्वी यश वैकुंठ तक बढ़ा रही पा श्री चरण
ये सरोजपाद चिन्हों से चिन्हित हों रहे आज कर स्मरण

गोविंद वेणु मनु बाजत मयूर नृत्य करे वेणु ताल पर
देख दृश्य पशु पक्षी नीरव देखें उत्तान गिरी भाल पर
प्राणवल्लभ कृष्ण धर विचित्र वेश जब बजाते बांसुरी
समर्पण भाव लिए हरिनियाँ सुन तान रह जाती अधूरी

जाती कृष्ण समीप निरखती विशाल चक्षु संग मोहन को
निरखती क्या समर्पित करती आंखें मतवाली शोषण को
स्वीकारती प्रेम भरी चितवन का सत्कार धन्य बड़ भागिन
धन्य 'इंदु' वेणु जीवन हम तो कर ना पाती होकर गोपिन

47

दृश्य मनोरम सर मयूरपिच्छ कर्ण कनेर पीत पुष्प धर

पंच प्रकार सुरभित वैजयंती माल गल पहन पीताम्बर
नट नटी अभिनय करे रंगमंच अति सुन्दर वेश धार कर
वेणु छिद्र से गुंजायमान कर रहे अधरामृत श्याम भर
दृश्य मनोरम सर मयूरपिच्छ कर्ण कनेर पीत पुष्प धर

कीर्ति लोक पावन करें गान चल पीछे पीछे मोहन के
गायें गान बना रमणीय वैकुंठ से श्रेष्ठ वृंदावन के
सुरेश महेश न गा सके गुणगान तेजस्व जिनका प्रखर
दृश्य मनोरम सर मयूरपिच्छ कर्ण कनेर पीत पुष्प धर

वेणु ध्वनि मन जड़ चेतन समस्त भूत को चूरा कर सुने
सुना और सुनकर ब्रजांगनाएँ जिस श्याम का वर्णन गुने
चित्रण करते आलिंगन करे तन्मय हो श्री कृष्ण पाकर
दृश्य मनोरम सर मयूरपिच्छ कर्ण कनेर पीत पुष्प धर

सामर्थ्य नहीं बोलें कैसे बृज बालाएं कृष्ण बसे मन
भ्रू विलाश प्रेमिल चितवन मधुर मदिर चेष्टाएँ मृदु मुस्कन
'इंदु' स्मृति पटल पर क्रीड़ा करती ये वेणु के मनोरम स्वर
दृश्य मनोरम सर मयूरपिच्छ कर्ण कनेर पीत पुष्प धर

48

दृग तेरे मुस्काते और हैं कुंतल घने
दृढ़ तेरा निश्चय प्रेम सूत्र में तू बंधे
हरित उद्यान पल्लव छांव मधुवन के तने
गोविन्द खड़े यहाँ अबीर गुलाल से सने।

कह रही ब्रज बालाएं ले हाथ पिचकारी
मन मंदिर में आ भी जाओ अब गिरधारी
आतुर अँखियाँ देख रही हैं बाट तिहारी

तू है रंग रसिया हम तेरी प्रेम पुजारी।

मधुवन में खेल रहे होली गोपियों संग
मली अबीर जब मुख में, उड़ा रंग ही रंग
उड़ा रंग ही रंग, ब्रजबाला रंग डाला
देख फागुन बहार, कान्हा भये मतवाला।

कुछ ऐसा रंग आ लगाओ श्यामबिहारी
तन मन ले रंग फाग में हुआ मनोहारी
'इंदु' मन भक्ति भाव से परिसृत कर मुरारी
मोदित नयन बढ़ा रहे रति तृष्णा हमारी।

49

द्रुमदल कानन में, वृन्दावन में, बरसे प्रेम रस धार है
रमण मोहनीय मन, शोभनीय तन, राधिका करे विहार है
ब्रज के कणकण में, धरा गगन में, प्रीत प्रेम की फुहार है
यमुना जी तट में, बृज घट घट में, होवे राग संचार है।

राधा रस घोले, बैठ हिंडोले, रस भरी गोप बाला है
वन्दन बृजरज है, यह मलयज है, सब प्रेम पाठशाला है
कान्हा रसिया है, मन बसिया है, प्रेम पूजने वाला है
मन प्रीत बिखेरे, गीत सुनहरे, प्रेम ही प्रेम पाला है।

ज्ञानी उद्धव को, पिय माधव सो, प्रेम पाठ सीखावे है
वृन्दावन धामा, राधा श्यामा, विद्या प्रेम बतावे है
रतनारे नैना, छीने चैना, डुब रस प्रेम पिलावे है
होय प्रीत पूजा, धर्म न दूजा, 'इंदु' समझ समझावे है।

50

धीर धीर नील नयन, श्यामल बदन, कोमलतन, मंगलम
हैं निस्पंद गुंजार, मधुर मुष्कासित अधर प्रभाषितम
प्रकाशित आनन् मंडल, तेजस-भान-विशाल, शोभितम
शर-चाप शोभित कर, सोष्ठव देह भव्य मृगेंद्र सम
जय दशरथनंद, कौशल चंद, पाद पंकज शरणम
हे नाथ! नाम गुणधाम निधान, आनंद सुख दर्शनम

51

नमामि शंख वज्र चिन्हांकित राघवेंद्र चरण सरोरुह
नमामि योगीन्द्र मन मधुप सेवित शाप पाहिमाम् दुरुह
नमामि मृदु सस्मित आनन विशाल भाल केहरि उत्ताल
नमामि शोभित कपोल कुंडल लोल नयन रंजन मराल।

नमामि राघव लाघव दनुज पराभव भक्त वेदना प्रमाथ
नमामि महेश चाप भंजक भूमिजा चित्त रंजक नाथ
नमामि कौसलाधिपति जपूं नाम मन्त्र वाणी दोष हर्ता
नमामि शिव आराध्य जपे नाम सहस्त्र उमा सुख कर्ता।

नमामि भानु उदय काल वेद वन्दित राम विग्रह शरण
नमामि नीलाज़्बुज नीलमणि नीलवर्ण मुक्त हार धरण
नमामि राम संग जितेंद्रिय भाव 'इंदु' नित्य शुद्ध करण
नमामि क्षीरजलधि नायक हर्ष दायक भव तरणीतरण।

52

नज़रें लगाये निहार रहा था मचलती लहरों को
न जाने कब सारा सागर ही ह्रदय में उतर गया

झुकी झुकी थी पलकें गम आँखों में तैर रहा था
वेदना प्रगट हुए बिना ही आँखों में जल भर गया
रात भर ठंडी हवाओं का अहसास होता रहा मुझे
भोर हुई तो धूप को देखा और तपिश से डर गया
ख्वाब तो ख्वाब थे आते जाते रहे सदा की तरह
मुलाकात उनसे हुई जीने का तरीका संवर गया

53

न जाने भगवान मेरा मुझसे क्यों रूठ गया

कोशिशें कितनी की पर लिख न पाया
उतारने की कोशिश की पर उतार न पाया
दिल खोखला दिमाग भाव शून्य है
लिखता कुछ हूँ लिखाता कुछ है
वर्षों का क्रम आज आखिर टूट गया
न जाने भगवान मेरा मुझसे क्यों रूठ गया

शून्य सा खो भाव विमूढ़ सा बैठा रह गया
सोचता कुछ था सोचता कुछ रह गया
प्रतिदिन तो शब्द अपने आप चले आते थे
कोशिश कभी की नहीं पर भजन बन जाते थे
माथा सूना पड़ा मन तो देखो रह ठूठ गया
न जाने भगवान मेरा मुझसे क्यों रूठ गया

ऐ मेरे रूठे देव शीघ्र मान भी जाओ
लिखूं न गुणगान तेरा तो मैं शून्य जान भी जाओ
जानते नहीं तुम बिन सुबह उदास है
यह जो लगाई आदत और यह जो प्यास है
बुझी न प्यास तो लगे अब आस निराश झूठ गया

न जाने भगवान मेरा मुझसे क्यों रूठ गया

लिखने बैठता हूँ तो कोई हाथ पकड़ लेता है
जरूर प्रभु तू ही है जी हाथ जकड़ लेता है
लेखनी सौ भजन वाली सौ शब्द न लिख पाई
वाह प्रभु तेरी प्रभुताई वाह वाह प्रभु तेरी प्रभुताई
खता कोई बड़ी हुई है समर्पण से जरूर मैं चूक गया
न जाने भगवान मेरा मुझसे क्यों रूठ गया

54

नवीन नील नीरद शुभकांति, कुञ्चित कच कपोल सोहे
कुंतल कुंडल भाल तिलक सज, कटितट पीताम्बर मोहे
रत्न जड़ित किरीट मौली धर, कोटि रवि तेज सम राजे
भ्रू रूचिर रक्तोपल लोचन, सुंदर नासिका विराजे

बिम्बफल सदृश अधर मनोहर, रदन वज्र मधुर मुस्कान
कामारि आशुतोष हृदय के, मानस मराल कृपानिधान
हृदय शोभित श्री वत्सल चिन्ह, भुज केयूर हीरक धन
कटि करधनी मधुर स्वर रसाल, अजान बाहु सत्य वचन

वामांग सिय हेम सिंहासन, तमाल वृक्ष वल्लरी सम
भुजदंड कोदंड वाम बाहु, दक्षिण पाणि बाण एकम
हैं युगल पद पद्म पद्मालय, पापहरण अखण्ड स्वामी
'इंदु' इंदु मुख सरोरुह नयन, सुखकारी अन्तर्यामी

55

नारायण मेरे मन के अविनय का दमन कीजिये
दया भाव बड़े विषय मृगतृष्णा का शमन कीजिये

संसार नीरनिधि से पार करो तरणि मेरी प्रभो
प्राणि मात्र कर्म प्राणी ही बने धरिणि मेरी प्रभो

परिमल सच्चिदानंद मकरन्द सुरसरि विष्णु वन्दन
श्रीपति चरणारविन्द भवभय नाशक शोक नाशन
तरंग जलधि से जलधि नहीं तरंग से जानते हम
आपसे ही मैं हूँ मुझसे आप नहीं मानते हम

धरा गोवर्धन नग नगभिद् अनुज दनुज कुल हन्ता
शशि भानु से दो, दो नैन प्रभा, प्रभावी भवकन्ता
दर्शन सुदर्शन धारी धार तितिक्षा उपेक्षा भव से
कर रक्षा नाथ भव रक्षक तटबंध भीषण रव से

प्रभु मत्स्यादि अवतार से अवतरित धरित्री रक्षक
त्रिविध ताप तापित प्रयुक्त हैं रक्षा को संरक्षक
दामोदर गुण मन्दिर सुन्दर वदन मनहर गोविन्द
भवनीरनिधि मंथन मन्दराचल सस्मित मुखारविंद

भय घन मुझ पर छाया दूर कीजिये दूर कीजिये
करुणामय नारायण चरण पड़ा आ शरण लीजिये
'इंदु' संकट विकट कट जाय कृपा ऐसी कीजिये
प्राणि मात्र कर्म बने ये तरणि धरणि मुझे दीजिये

56

नैनन नीर बरस रहे, तुम्हें तकूँ दिन रात
आ जाओ मन मोहना, सुन विरहन की बात
काहे गयो मथुरा मुरारी छोड़ सारी गोपियाँ
जल नैन से बरसे मधुर यादें सताएं ओ पिया।

कान्हा तिहारी प्रीत लागे मीत सी श्री धाम को
बांके बिहारी राच राख्यो प्रेम तेरे नाम को
आ ब्रज धरा हरि चैन दो बेचैन ग्वालन बोलती
ओ बांसुरी वाले बजा दे वेणु मन सब डोलती।

तू तो बड़ो निठूर लूटे प्रेम से है निन्दियाँ
काहे गयो मथुरा मुरारी छोड़ सारी गोपियाँ
माया हरो बांके बिहारी लाल जी श्रीश्याम जी
मेरो हृदय बस्यो सदा माधव तिहारे ध्यान जी।

गोपाल आओ कष्ट हर लो बात इतनी मान लो
ये 'इंदु' मन तो राधिका सा आ बसे यह जान लो
दुख मन झरे ऊधो कहे हैं ज्ञान की ही बोलियाँ
काहे गयो मथुरा मुरारी छोड़ सारी गोपियाँ।

57

निहार रहा था मचलती लहरों की तरह तुझे नजर गड़ाए
न जाने कब उतर गया पूरा सागर ही हृदय में बिन बताए
झुकी झुकी पलकें थीं तेरी यादें तैर रही आंखों में थी
वेदना का समंदर था पर नजरें तो तेरे ख्यालों में थी

मौन था अंतस का सागर गोविंद तस्सवुर में कौन लाये
निहार रहा था मचलती लहरों की तरह तुझे नजर गड़ाए

रात भर ठंडी शांत हवाओं का अहसास होता रहा मुझे
भोर हुई तो धूप को देखा तपिश से डर लगता रहा मुझे
ख्वाब तो ख्वाब ही थे आते जाते रहे 'इंदु' ख्वाब की तरह
ख्वाब में जो आये सांवरे तो खिलखिल गया गुलाब की तरह

मुलाकात जो तुमसे हुई कान्हा तन मचल गया मन लुटाए
निहार रहा था मचलती लहरों की तरह तुझे नजर गड़ाए

58

निज अंतस के उत्कृष्ट अभिमान से
जग रूपी महा सागर के ध्यान से
अनुभूति जागृति से, विद्या ज्ञान से
उर के तिमिर को काट काट प्रभु आलोकित करा
हे तपस्वी मेरी अंतः बुद्धि प्रकाशित करा

यश वैभव आकांक्षा हो यदा कदा
प्रेरणा दे प्रयत्न शील रहूँ सदा
धरा ज्ञान बना सुखदायक सर्वदा
आत्म शक्ति से समस्त सुमतियाँ एकत्रित करा
हे तपस्वी मेरी अंतः बुद्धि प्रकाशित करा

मेरी बुद्धि प्रज्ञान से हो प्रेरित
विद्वानों के संसर्ग से संयमित
ज्ञान यज्ञ विद्वजनों से रक्षित
मेरी सिद्धि प्रज्ञा सूर्य पर्यंत सुरक्षित करा
हे तपस्वी मेरी अंतः बुद्धि प्रकाशित करा

59

निंदिया ले चल मुझे उस जगह, जहाँ मन्मथ से सुंदर श्याम
कुटिल अलक मकराकृत कुंडल, नयन नचावत आठों याम
बिम्बफल अधर तिलक भाल, नासिका मनोहर कटि करधन
दसन चमकत दामिनी से ज्यों, बोलत दमकत रसाल वर्धन।

वक्षस्थल वनमाला शोभित, हेमलता चढ़ी वृक्ष तमाल
श्वेत उत्पल पंखुड़ी केसर, सदृश पीत वसन पट्टिका लाल
देह सुरभित मञ्जरी पराग, मानो मधुकर मण्डित अम्बुज
निंद्रा दिए परिरम्भ वेष्ठित, मलय द्रुम जकड़ रहा नाग भुज।

निंद्रा आये इस विधि माधव, आनंद उमंग हर्षित हुई
मिलन से वंचित रही सखि री, निंद्रा सौत मुझे सुला गयी
नींद जगी तो कोई ना था, कामदेव आघात सह रही
'इंदु' ज्यूँ मेघनाद शक्ति लगी, और लक्ष्मण ने मूर्छा सही।

60

प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल नित नूतन उत्पात मचावे॥

लोभ मत्सर मोह भरयो पड्यो
यो मन टेढ़ो मेढ़ो ही जावे
छाड़ी दी इसे बीच भंवर में
नैया अब डगमग ठोकर खावे
खा खा काल लहरी को थपेड़ो
उर को सारो मैल उतर जावे
प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल नित नूतन उत्पात मचावे॥

अन्तः कुम्भ लेय गोतो देख्यो
क्लेश दुर्भाव सभी निजर आवे
कर ली साफ़ ले हरिनाम साबुन
अंतस को कलुष स्वच्छ हो जावे
भंवर जाल फंसी जीवन नैया
'इंदु' प्रभु नाम ही पार लगावे
प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल नित नूतन उत्पात मचावे॥

61

प्रभुजी मेरे अन्तः धीर धरावो
कष्ट देह को फिर भी सहयो जावे

चित्त और विचलित न करावो
सुख दुःख को झूलो इत ऊत डोले
हिंडोल पकड़ पार लगावो
कस कर झटके दुख सारे भग जावे

धूप छांव से मत घबरावो
सुख दुःख निज के चित्त ऊपर बासे
दुख तो आ आ मन हड़कावे
सुख तो अन्दर बैठो मौज मनावे

'इंदु' खिंच सुख ऊपर लावो
कर प्रभु प्रार्थना सांचे हिरदय संग
साँचो सुख साँचो फल पावो
प्रभुजी मेरे अन्तः धीर धरावो

62

प्रभो ऐसा करो की एक हों वाणी व मन मेरे
प्रकाशित आप हों मेरे हृदय में, वेदना छेड़े
न भूलूँ मैं कभी गुरु ज्ञान, अनुभव को न त्यागू मैं
पढ़ूं, पढ़ता रहूं, अध्ययन हो बस और जागूँ मैं

सदा विद्या व ब्रह्मज्ञान का चिंतन पठन ही हो
फिसल वाणी कभी भूले न शब्दों को मनन ही हो
शरण गुरु की रहूं रक्षा करूँ संस्कार भारत के

रहें सब ताप जग के शांत, हो यश गान भारत के

शिरोमणि नाथ देना हो हमें ऐसा सहज वर दो
कभी कोई रहे ना कामना मन भाव यह भर दो
रहे अंकुरित मन में भक्ति का ही बीज हरदम से
न चाहूं मोह माया ना कभी हो कुछ गलत हम से

महात्मा भक्त का हो संग, मन है शुद्ध जिनका प्रभु
न है विच्छिन्न जो आराधना के भाव मन का प्रभु
कथा रस पान कर उन्मत्त होऊं देख लीलाएं
सहज हो 'इंदु' इस संसार सागर पार तू जाए

63

प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल
नित नूतन उत्पात मचावे
लोभ मत्सर मोह भरयो पड्यो
यो मन टेढ़ो मेढ़ो ही जावे
छाड़ी दी इसे बीच भंवर में
नैया अब डगमग ठोकर खावे
खा खा काल लहरी को थपेड़ो
उर को सारो मैल उतर जावे
प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल

नित नूतन उत्पात मचावे
अन्तः कुम्भ लेय गोतो देख्यो
क्लेश दुर्भाव सभी निजर आवे
कर ली साड़ ले हरिनाम साबुन
अंतस को कलुष स्वच्छ हो जावे
भंवर जाल फंसी जीवन नैया

'इंदु' प्रभु नाम ही पार लगावे
प्रभुजी मेरो मन घनो कुटिल
नित नूतन उत्पात मचावे

64

प्रियतम तुम्हारे स्वागत को अंतस दीप एक जलाया है
जीवन पर्यंत यह जलता रहेगा, इस काल-चक्र की सौगंध

मन-उपवन में प्रेम-पुष्प हैं खिलाये, ये खिलते ही रहेंगे
सुरभित प्रेमानुभूति के मिलन की इन यादों की सौगंध

तुम्हारे अनुराग की उष्णता, तन मेरा करती स्पंदित अब
उष्णता भरे इस प्रेमानुराग से उठते इन शोलों की सौगंध

मेरा दंभ तेरे रूप में है विलीन, तेरी आभा से मैं आलोकित
मैं तुझ में, तुझमें है सारा ब्रह्माण्ड, इस अलोक की सौगंध

तेरे मुस्कराते अधर, ये रसीले नयन, विलय को आतुर मन
मेरी समग्र कामनाएँ तुझमें तिरोहित इन उमंगों की सौगंध

ये अलकें, ये लटें, उलझ उलझ जाए, मादित है ये तन-मन
रूप छटा निराली रासबिहारी सच तेरी नटखटता की सौगंध

65

प्रियतम मेरे नैन तरस रहे, बरसों से तुझे पाने को
आते क्यूँ नहीं इन अँखियों में, जीवन ज्योत जगाने को।

मेरे शब्द भी ढूंढ़ रहे गाऊं, गीत तुझे मनाने को

आते क्यूँ नहीं तुम इस जिह्वा पर, गीत प्रीत का गाने को
मत तड़पा कंठ अवरुद्ध हो चुके, रो रो तुझे पाने को
आते क्यूँ नहीं मोहन निर्मोही, प्रेम सरिता बहाने को।

प्रियतम मेरे नैन तरस रहे, बरसों से तुझे पाने को
आते क्यूँ नहीं इन अंखियों में, जीवन ज्योत जगाने को।

दोनों बहियाँ तड़प रही, प्रियवर प्रेमालिंगन पाने को
आते क्यूँ नहीं इन बांहों बीच, सुख मिलन का दिलाने को
देख लालिमा सांझ की ह्रदय गति, हो चली मंद जाने को
'इंदु' अर्घ्य का समय हो चला, अब अपने पास बुलाने को।

प्रियतम मेरे नैन तरस रहे, बरसों से तुझे पाने को
आते क्यूँ नहीं इन अंखियों में, जीवन ज्योत जगाने को।

66

पूजूँ देवि निगम प्रतिपादित, प्रवरातीर निवासिनी तुझे
नमन देवि नारायणी प्रिया, क्षीर सागर विहारिणी तुझे
जगत सार आधार रूपिणी, या देवि मनोहारिणी तुझे
मुनिगण सेवित शरणे रक्षित, लक्ष्मी विद्यारूपिणी तुझे
जयति मनहर रूप वाली माँ, तुम्हारी सदा जय हो मैया
यहाँ भवकूप में पड़ा 'इंदु', उद्धार करो आ ओ मैया

दिव्यमुख पूर्णचंद्र सदृश है, कुन्दपुष्प स्वच्छ दन्तावली
मन्मथ पराजित पदनख ज्योत, मधुकैटभ हंता अवली
शेषशायनी गरुड़ वाहिनी, प्रफुल्लित कमल नयनावली
दुराराध्या संकट हे देवि, भष्मित संकट अरण्यावली
हे विष्णु प्रिया हे सिंधु सुता, दुर्गुण संहार करो मैया
यहाँ भवकूप में पड़ा 'इंदु', उद्धार करो आ ओ मैया

मैया मंजीर अंकित चरण, आभूषण मणि मुक्ता भरण
सदा कंचुकी वस्त्र आवरण, सौंदर्य वक्त्र अंबुज धरण
शचीपति विघ्न भय हर्ता माँ, हो ब्रह्म विप्र आनंदकरण
करती हो गज कष्ट निवारण, करुणा जो हो तेरी शरण
मुझ 'इंदु' शरणागत पर करो, कृपा आय शीघ्र भरो मैया
यहाँ भवकूप में पड़ा 'इंदु', उद्धार करो आ ओ मैया

काट ग्रीवा राहु की करती, देव रक्षा दे अमिय मैया
देती असुरों को मृत्यु उलट, कर मोहिनी अभिनय मैया
रण क्रीड़ा की संयोजक माँ, वीर प्रवीर दैत्यों से निरत
वध्व मुनीश्वर वरदात्री माँ, भक्तों को पालन करो सतत
जगद्धात्री अनेक रूपिणी, कष्टों पर वार करो मैया
यहाँ भवकूप में पड़ा 'इंदु', उद्धार करो आ ओ मैया

67

पीछे मूड़ ना देखेंगे वो छोड़न तुझे जो आवेंगे
माटी का तन माटी में मिल जायेगा काहे गुमान करे
इक तेरे बोल ही रह जाएंगे क्यूँ न उस पर ध्यान धरे
ओछी कड़वी वाणी कह कह तू क्यूँ मन में संताप करे
ढाई आखर प्रेम के जाने न कितने गहरे घाव भरे
तेरे करम ही तेरे साथी बस ये ही साथ जावेंगे
पीछे मूड़ ना देखेंगे वो छोड़न तुझे जो आवेंगे।

चित्त को सच्चो सुख तो भैया दुखियन की सेवा में बसै
आनंद मिलै तजि निज स्वारथ जो नर परमारथ में हरसै
जीवन सफल उसी जन को जाको नैन पर दुःख में बरसै
अरज इतनी सुन लीजो मेरी प्रभु प्रीत में ही मन तरसै
'इंदु' जब मनड़ो गावे हिल्लोर सब ताले खुल जावेंगे
पीछे मूड़ ना देखेंगे वो छोड़न तुझे जो आवेंगे।

68

फिर मेरे मन को घेरा, छाया दृगों में अँधेरा
फिर बातें वही पुरानी, थी हृदय पर मंडरानी
दाह बढ़ती जा रही है, स्थान न यहाँ पा रही है
श्री चरणों में डाल डेरा
फिर मेरे मन को घेरा
छाया दृगों में अँधेरा॥

मूक वाणी हृदयतल में, जग के इस कोलाहल में
कहीं न डूबे ध्यान रहे, हर संग का मान रहे
तुम मुझ को सदा ढक कर, रख ले मेरे चेतन पर
अवनि पर उदार उजेरा
फिर मेरे मन को घेरा
छाया दृगों में अँधेरा॥

69

बस गयी हृदय में मनमोहन छवि तेरी प्यारी
छटा मनोहारी, सूरत न्यारी, हे गिरधारी।

मेरी अँखियाँ ना चाहें किसी और का दर्शन
विह्वल अश्रुधार ढूंढ़ती हैं बह बह समर्पण
कान्हा तुमसे उलझी जब से ये नैन कटारी
बस गयी हृदय में मनमोहन छवि तेरी प्यारी
छटा मनोहारी, सूरत न्यारी, हे गिरधारी।

गोपाल तेरी धेनु में, ब्रज धाम की रेणु में
भटक गया चित्त मोहन मेरा तेरी वेणु में
भूल गया जग माया, भूल गया सुध बुध सारी

बस गयी हृदय में मनमोहन छवि तेरी प्यारी
छटा मनोहारी, सूरत न्यारी, हे गिरधारी।

भुला दुख दर्द सब जब से आया शरण तिहारी
तारण हार बना तू नैया पार लगा डारी
विपदा कैसी भी आयी तूने ही संभारी
बस गयी हृदय में मनमोहन छवि तेरी प्यारी
छटा मनोहारी, सूरत न्यारी, हे गिरधारी।

टेढ़ी तेरी मूरत, टेढ़ो नाम, खड़ो टेढ़ो
टेढ़ी तेरी लीला टेढ़ो रास रचा छेड़ो
'इंदु' उर फँस गयी फाँस टेढ़ी प्रेम रस वारी
बस गयी हृदय में मनमोहन छवि तेरी प्यारी
छटा मनोहारी, सूरत न्यारी, हे गिरधारी।

70

बामन भगवान ने, नापी भूमि पग तीन
ब्रह्म लोक पग छुआ, ब्रह्मा पखार रहे।
जलधार बनी गंगा, भागीरथ प्रयत्न से
करने पृथ्वी पवित्र, गंगा धरा पे बहे।
गंगा नाम सुधा रस, गंगा जीवनाधार है
गंगा संस्कृति हमारी, ऋषि मुनि ये कहे।
सरिता नहीं है कोई, मात हमारी प्राण है
पूजूं इसे दे दे अर्घ्य, पाप भी धुल रहे॥

घाट घाट पवित्र है, त्रिवेणी संगम स्थान
कुम्भ की बेला महान, आ सब पाप हरो।
अमृत कलश बूंदें, छलकी जगह चार
मेलो हर चार वर्ष, भव पार यूँ करो।

गंगा कालिंदी संगम, पुण्य मिलन आस्था का
महाकुम्भ संयोग है, हरी का ध्यान धरो।
हरी चरणों से आयी, मंदाकनी अमृत है
पाप हरे कष्ट मिटे, इसमें स्नान करो॥

71

भक्त वत्स हितकारी कृपालु अति सुखकारी नमस्कार
धीर शील देते स्वधाम जिनके हैं निष्काम संस्कार
श्याम वर्ण तन भवसागर मंथन के मन्दराचल नमन
चरण सरोरुह नेत्र सरोरुह मद मोह का कर निवारण

अजानबाहु महाबली अप्रतिम वैभव अपरिमेय राम
वाम पाणि शर दक्ष चाप स्कंध निषंग शयन क्षीर धाम
त्रिलोकीनाथ सूर्यकुल भूषण शिव चाप खंडन कर्ता
मुनिजन देवाधिदेव के हर्ष, दैत्य शमन, कष्ट हर्ता

कामारि शंकर के वन्दित ब्रह्मा के पूजित विशुद्ध बुद्ध
रमापति राघवेंद्र दोष नाशक आप ही संतन गति शुद्ध
शचीपति अनुज उपेंद्र कोटिश जयति रामचन्द्र नमस्ते
'इंदु' हृदय वासित सिय लखन सहित रामचन्द्र नमस्ते

72

भजूँ सुबह सुबह परम कल्याण, रूपिणि माँ भवानी को
वेदांत वैद्य वैभव जिनका करुणामयी रूद्राणी को
शुद्ध स्वरूपा विश्व की उत्पत्ति स्थित लय की कारक है
विद्या की अधिष्ठात्री वेद गति से अति सुख दायक है

कामेश्वरी कमला महेश्वरी शाम्भवी जगजननी नमन

परा वागेश्वरी त्रिपुरेश्वरी वाणी आपको वन्दन
बिम्ब सदृश रक्त वर्ण अधर हैं मौक्तिक नासिका शोभित
कर्ण पर्यन्त विस्तीर्ण नयन हैं मणि मय कुंडल लोलित

सस्मित आनन मृगमद उज्ज्वल भाल भुजा रूपिणी नमस्ते
रत्नखचित स्वर्ण कंकण अंगदादि भूषित मणि नमस्ते
भव सागर को पार लगादे मात ऐसी जलपोत सी
पद्म अंकुश ध्वज सुदर्शनादि धर मंगल चिह्न ज्योत सी

73

मस्तक सुंदर चन्दन शोभित है
पूजते देव जो सब क्षोबित है
नमोस्तुते सूर्यवंश आनंदम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

मुनीन्द्र यज्ञ पूर्ण कराए राम
पाषाण अहिल्या तराये राम
महादेव महाधनु विध्वंसकम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

पितु वचन पालन हारे श्री राम
तप वन विचरने वाले श्री राम
नमस्ते पाणि धनु चाप धारिणम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

माया मृग पर छोड़े वाण राम
जटायु को कर मोक्ष प्रदान राम
नमस्ते वध बाली कपि नायकम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

दे वानर संग मित्रता प्रमाण
सागर ऊपर सेतु कर निर्माण
नमस्ते रावण कुल नाशनम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

दीन देव को हर्षित करते प्रभु
वानर कामना पूर्ण करते प्रभु
नमः शरणागत शोक विनाशकम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

निष्कंटक राज्य के पालक राम
लोकप्रजा भित्ति के भक्षक राम
लालसा मदमोह निवृति कारकम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

सम्पूर्ण धरा भार हर लिया राम
सभी जनों को ले गए निज धाम
भवरूपी अंध हेतु दिवाकरम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

जयति राम रमापति रामेश्वरम्
भवोद्भव न विदंते पठ निरन्तरज़्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्
जयति राम रमापति रामेश्वरम्

74

मझधार में कश्ती है और लहरें तूफानी हैं
सुन जग के पालन हारे मेरी नाव पुरानी है

हटा गगन से काली घटा दूर करो अंधियारा
मायला के तिमिर भरे अंतस में ला दो उजियारा

सूखी धरा में प्यास बुझाने का तू ही सहारा
पानी की इस बस्ती में सब कुछ पानी पानी है
मझधार में कश्ती है और लहरें तूफानी हैं

घायल खगसा उड़ता फिरूँ एक नीड़ की चाह में
घनी रात का साया है रोशनी ले आ राह में
डूब न जाये सब कुछ मद लोभ मोह के प्रवाह में
जग इकपल आना इकपल जाना यही कहानी है
मझधार में कश्ती है और लहरें तूफानी हैं

मालिक दया कर इतनी धीरज धरूँ धरा सा बनूँ
अंदर ही अनल सा सुलगता रहूँ पर आह न भरूँ
नमनयन कर 'इंदु' देख जीवन रस सुधा अधर धरूँ
काले मेघा बन निरखूँ दुनिया कितनी वीरानी है
मझधार में कश्ती है और लहरें तूफानी हैं

75

मेरे नैनन बसे मधुकर मकरन्द भूपाल मणि श्री राम
जाको नाम शांति परम धाम पुनीत विश्राम अति गुणग्राम
निर्मल पावन विशुद्ध ज्ञान दाता क्रोध हरण करुणा धाम
हे इन्द्रिय जीत मन विजित वीर धनु शायक प्रवीर अभिराम
मेरे नैनन बसे मधुकर मकरन्द भूपाल मणि श्री राम।

प्राकृत रूप प्रकट परमात्मा परम हित प्रेरक अनंत ईश
भूदर सुंदर श्रीवर हरि हर घट घट वाशी कौशलाधीश
हे सत्यकृत सत्यव्रत सत्यरत सदा सन्तुष्टि प्रदाता राम
दिव्य शक्तिवान धीमान धर्म आपका कवच करूँ प्रणाम
मेरे नैनन बसे मधुकर मकरन्द भूपाल मणि श्री राम।

सिद्ध आप साधक आप साध्य आप वाच्य वाचक रूप आप
नित नित्यमुक्त निर्माण हरि ज्ञान गहन हरते जग के पाप
वक्र अवलोक त्रिलोक शोक हर प्रभु मानस पूजत गुणधाम
कुंडल विलोल लोचन रसाल गति मराल छवि लाली ललाम
मेरे नैनन बसे मधुकर मकरन्द भूपाल मणि श्री राम।

अजान बाहु कोदंड मण्डित वाम भुजदंड वाम पाणि शर
सर्वज्ञ सर्वेश्वर नमित सुर मुनि गंधर्व सिद्ध अवनिप नर
जानकी नाथ रघुनाथ कृपा कीजिये तरनि सम तेज धाम
'इंदु' शरण शोक हर मोह हर हनुमन्त हृदय बसों निष्काम
मेरे नैनन बसे मधुकर मकरन्द भूपाल मणि श्री राम।

76

मेरे प्रभु मेरे तो श्याम राधा मोहन घनश्याम
लीलाधर लीला रचाये रास रमाये ब्रजधाम
आदि अनादि सनातन निरन्तर परमेश अविनासी
भक्त जनों की सुन पुकार देह धरे घट घट वासी

अजर अमर अनादि अनंता अगोचर लीला धारी
दिखा रहे ब्रज में नन्हें बाल मुकुंद लीला भारी
काले काग की महिमा धन्य है धन्य कृष्ण मुरारि
छीन ले जाये प्रभु हाथ से रोटी माखन वाली

ब्रह्मा जी अचंभित हैं देख ग्वाल बाल संग खेल
ब्रजगोप बाल के मुख से छाछ निज मुख रहे उड़ेल
भक्त स्वामी की प्रेम अभिव्यक्ति का सर्वोच्च दर्शन
निर्गुण जगस्वामी सगुण हुए आये खाने जूठन

माखन चोर कह रही ब्रज बाला त्रिलोक स्वामी को

पकड़ कान धमका रही निराकार अंतर्यामी को
सृष्टि संचालक नाच रहे ग्वाल बाल संग ब्रज में
'इंदु' नम चक्षु लिप्त हैं भक्त प्रभु के खेल सहज में

77

मेरे स्वामी, मुझ पर कृपा, इतनी तो कीजये
भक्ति बनी रहे सदा, अपनी शरण तो लीजिये

हे नाथ किये बहुत पाप, अब करूँ पश्चाताप
मन शुद्ध कर आप, पाप सारे, हर तो लीजिये

तुम करुणा नाथ, दया अब इतनी सी कीजिये
जान अबोध, क्षमा कर, दुःख मेरे अब पीजिए

यह जीवनसार तो बस अब, आपको सौंप दिया
इस नाव को आप ही, भवसागर पार कीजिये

इस पार तो कैसे भी लग जाऊँ, उस पार तो
आप ही सहारा देकर, अब संभाल लीजिये

हे दाता तुम जग को देते, करते मन प्रसन्न
मुझ याचक का भी मन प्यासा, इसे अब सींचिये

शरण पड़ा हूँ चरणों में, कर रहा आराधना
आराधक-सेवा में सब, स्वीकार तो कीजिये

संसार-सिन्धु जटिल, 'इंदु' जटिल-जीवन-धारा
कर सरल समस्या, मुक्त जीवन बंधन कीजिये

78

मैं एक मिलन को प्यासी सरिता की धारा
तू है प्रियतम रस भरा एक सागर प्यारा

बह चल संग संग मेरे आंसू सागर में
डूबो दूँ दुःख को जगत की इस गागर में
हरि कौन जगत में है तुमसे बड़ा सहारा
मैं एक मिलन को प्यासी सरिता की धारा

तेरे हाथों में प्रभु पतवार और नैया
डूबा दे या तैरा दे तू ही खेवैया
प्रीत तट से प्रेम घट में भरा स्नेह सारा
मैं एक मिलन को प्यासी सरिता की धारा

मिलें प्रेम रस में विरह वेदना की सरिता
सुख पाए तुझमें मिल जाए मेरी कविता
मोहन आ भी जाओ उर पुकारे हमारा
मैं एक मिलन को प्यासी सरिता की धारा

79

मैं दुख की गठरिया राम जी, सुख कैसे मन मेरे लाऊँ
दिन-रात पाप की चाकी पिस, आटो पुनीत कैसे पाऊँ

पाँच इन्द्रियाँ बनी नचनिया, घर बैठी उधम रही मचाय
नृत्य कराय भोगी इन्द्रियाँ, मुझे निज चाकर रही बनाय
चाबुक कोई मार निकाले, ऐसो गुरु कैसे मैं पाऊँ
मैं दुख की गठरिया राम जी, सुख कैसे मन मेरे लाऊँ

दिन बीता और रात बीती, उम्र जाय ढलती धीरे धीरे
राम ना का सुमिरन न किया, पछता नैन से आंसु गिरे
सांध्य अर्घ्य का समय आचला, दृगजल संग तर्पण कराऊँ
मैं दुख की गठरिया राम जी, सुख कैसे मन मेरे लाऊँ

काम क्रोध मद लोभ की, मदिरा नित में इसे पिलाऊँ
तन बैरी अब साथ न देवे, प्रभुजी किस विधि धीर धराऊँ
'इंदु' राम ना बिना सुमिरन, प्रभुजी मुक्ति कहाँ से पाऊँ
मैं दुख की गठरिया राम जी, सुख कैसे मन मेरे लाऊँ

80

यशोदा करा स्नान ध्यान सजाया कन्हैया को
सुंदर सुंदर वस्त्र पहना बैठाया कन्हैया को
बैठाया आंगन में और चली माखन बिलोने
वापस आय देखा श्याम इस कोने उस कोने।

मिले तो मिले हरि बैठ दूर कीच सने हुए
अलकें हैं घुँघरवाली मोर मुकुट पहने हुए
ओ पूतना के तारक क्या सूरत है बनाई
अचरज भरी देख गुस्से में बोल रही माई।

लगता है सूकर पिछले जनम का रहा तू है
आदत गयी नहीं तो खेल कर्दम रहा तू है
बंद किये नयन कृष्ण होले होले मुस्काये
मैया तू तो व्हे गयी ज्योतिषी भूत बताये।

सच है सतयुग में वराह अवतार पधारे थे
हिरण्याक्ष को मार विष्णु पृथ्वी को तारे थे
कह रहा 'इंदु' प्रभु की लीला प्रभु ही समझाए
नमन बारम्बार लीला धर तू उर बस जाए।

81

याद में तेरी कटे दिन रैन कैसे सांवरे

वेणु धुन बेचैन करती है मुझे ओ सांवरे
याद है जमना किनारे गौ चराना सांवरे
ब्रज गली में बंसरि का तेरा बजाना सांवरे।

चुप चुराना श्याम माखन बन यहाँ अनजान रे
गोपियों को बस सुनाना वेणु की मृदु तान रे
नैन तेरे हैं कटीले मद भरे लें जान रे
खेल में अद्भुत बताया प्रेम का ये ज्ञान रे।

सुन धड़कता दिल हमारा है मिलन की आह से
है हुआ घायल हृदय टेढ़ी नशीली निगाह से
उतर कर नटखट चला आ 'इंदु' दिल की राह में
मन समर्पित तन समर्पित आज तेरी चाह में।

82

ये हरित छटा ये शीतल मलय समीर
दे मौन निमंत्रण बुला रहे हैं तुम्हें
शशि मुख्र दर्शन को प्यासे नयन मेरे
कर पूर्ण समर्पण बुला रहे हैं तुम्हें

ऊंचे पर्वतों के शिखर पर गूंजती
वेणु की स्वर लहरी अँखियाँ भरी भरी
हेम कण अवनी सा पीताम्बर धारे
अरु सस्मित ओठों पर वेणु धरी धरी

तिरछी निगाहें और श्याम मेघ वरण
ये प्रीत अंकुरण बुला रहे हैं तुम्हें
ये हरित छटा ये शीतल मलय समीर
दे मौन निमंत्रण बुला रहे हैं तुम्हें

हिरण्य आभा सा दमकता ये मुखड़ा
अम्बर पर छाई घटा से चमक रहा
वासंती रुत और मनहर जमना तट
गोप बालाओं संग नर्तन खनक रहा

ये राग बसंती ये चैत्र की बयार
मेरे मदिर स्मरण बुला रहे हैं तुम्हें
ये हरित छटा ये शीतल मलय समीर
दे मौन निमंत्रण बुला रहे हैं तुम्हें

83

रघुनंदन प्रभु राजीव नयन, शोभा ज्यूँ कोटि मयन
करुणारस अयन रूप भूप चयन, सुंदर छवि नारायन
सन्त समाज कानन भानु सम, कवि गान कीर्ति प्रणयन
कुंचित अलकें बरूथ कृत हैं, मध्यम सुवासित सुमन।

लग मणि शिशु सर्प फणि समुदाय, केकी चन्द्र बचाये
मयूर मुख कुंडल छवि लख लख, चोर सर्प सकुचाये
आनंद दायक भृकुटि मस्तक, चिबुक अधर द्विज रसाल
मनमोहक सस्मित कपोल हैं, नासिका सुगढ़ कमाल।

सुंदर पट्पीत विशद सोहे, उर तुलसी पुष्प माल
श्याम तमाल वृक्ष तन ऊपर, तिरंगा शुक खग ढाल
उड़ न पाए शुक बस उर वसन, सुवर्ण पाश है खास
'इंदु' तुलसी वाणी कहे सुन, राघव अहिर्निश वास।

84

रहे कृपा इतनी की सुबह शाम बस रटूँ तेरा नाम
इतनी शक्ति मुझे देना की लड़ूँ मैं जीवन संग्राम
बीच भंवर नैया ले चला दे पतवार भव पार करो

हे गोविन्द! हे गोपाल! चरणन पड़ा शीश हाथ धरो।

विषम परिस्थितियाँ थी चहुँ ओर गहन तिमिर छाया था
ज्योतिपुंज बन आये तूने सु-सुगम मार्ग बताया था
कर्तव्य पथ चलना सिखाया बताया जियो या मरो
हे गोविन्द! हे गोपाल! चरणन पड़ा शीश हाथ धरो।

कितने तीव्र तूफ़ान आये कितने आकर चले गए
आसमान में काले बादल घिर घिर छा कर चले गए
जीवन तो चलता रहता इन बातों से न तुम बिखरो
हे गोविन्द! हे गोपाल! चरणन पड़ा शीश हाथ धरो।

बिखरा संसार के तूफ़ान में, तूने आ संभाला
घोर निराशा के बादल ने घेरा साहस भर डाला
हे प्रभु क्षण प्रति क्षण 'इंदु' के संग रह उर में धैर्य भरो
हे गोविन्द! हे गोपाल! चरणन पड़ा शीश हाथ धरो।

85

राम शरण तुम्हारी, आज पड़ा ये भिखारी
झोली भर दे विधाता, अर्ज सुन हमारी।
कुटिल विचार लिए, ढेरों पापाचार किये
धरूँ चरण मस्तक, मैं मनु अहंकारी।
काम क्रोध मोह लोभ, दुखित हृदय क्षोभ
नाथ सब मनोरोग, सब हैं हाहाकारी।
अंतःकरण मलिन, वात्सल्य दया विहीन
कृपा दृष्टि बरसाओ, रहूँ सदा आभारी॥

हृदय सशंकित है, अत्यधिक व्यथित है
अहम उपस्थित है, भूल सुधार लेना।

नाशवान यह तन, चंचल चपल मन
उठता गिरता यहाँ, प्रशांत कर देना।
लहर सम संसार, तरंगित बारम्बार
सुख दुःख आते जाते, समन्वय करे ना।
सम्पूर्ण खुशियाँ कहाँ, मन शांत होता जहाँ
'इंदु' करो चित्त शांत, प्रभु दया दे देना॥

86

लालिमा लिए क्षितिज संग था, प्रभु तुम अचानक आ गए
देखता रहा मैं जीवन को, आकाश बन तुम छा गए
धरा सा सहता रहा मैं सब, सिमट तेरे विस्तार में
क्षितिज प्रेम अस्तित्व में यही, होता रहा संसार में

देकर आनन्द प्रद स्वर प्रणव, अन्तस झंझा हटा गए
देखता रहा मैं जीवन को, आकाश बन तुम छा गए

कितना सुखद लगे सांसों का, भक्ति के क्षितिज में रहना
करूँ सांध्य बेला में दर्शन, सुखद उम्र का यूँ ढलना
झंझावत व्योम रक्ताभ सा, होता कुछ पल जीवन का
शांत नील नभ सा उर होता, देख कर सौंदर्य मन का

धरा की उत्पत्ति का अद्भुत, मृदु रव घट घट बसा गए
देखता रहा मैं जीवन को, आकाश बन तुम छा गए

श्याम व्योम पर है आच्छादित, अवसाद रूप मेघ घटा
मधुरित नंदन वन के कानन, छाई अतुल्य सघन छटा
ढूंढ़ता व्योम के नीरव में, तेरे रूप अस्तित्व को
नाथ शीघ्र कृपा कर 'इंदु' पर, निभा ले निज दायित्व को

तेरी समष्टि में व्याप्त जगत, बिखेर प्रेम घन आ गए
देखता रहा मैं जीवन को, आकाश बन तुम छा गए

87

लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले
बैरी ढीठ फिर भी न आये, कान्हा ब्रज के तुम ग्वाले
नैनन अश्रु बहे मन रोये, चित्त भाव विभोर हाले
ढूंढ़ ढूंढ़ ब्रज गलिन थकी मैं, मन मोहन मुरली वाले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले।

मथुरा गये कृष्ण कन्हाई, छोड़ गोपियन सुख कारी
जाना था तो की क्यूँ लीला, क्यूँ मारी नैन कटारी
चुरा वस्त्र हमारे नदी तट, क्यूँ दिया ज्ञान बनवारी
याद आता माखन चुराना, छेड़ छाड़ बैठे ठाले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले।

कुंज गलिन में जमना तीरे, बंशी की धुन मतवाली
तेरे सिर मोर मुकुट सोहे, मोहें लट घुंघर वाली
तिरछी नजर चाल नखराली, है सूरत काली काली
'इंदु' हृदय उलझ बसा मोहन, मेरे मन भरो उजाले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले।

प्रेम की वेणु प्रेम की धेनु, प्रेम धाम सबसे न्यारा
वृंदावन प्रेम नगरी बनी, जब आया मोहन प्यारा
रूठ छोड़ चल प्रेम नगरी, गोपी नैनन का तारा
'इंदु' कहे आय श्याम प्यारे, बसों अंतस ओ निराले
लिख लिख पाती श्याम पिया को, किये बहुत कागद काले।

88

वसंत शुद्ध गगन सुंदर उपवन पद्माकर सुरभित लाया
शीतल मन्द समीर बहे तबहिं गोपाल ले गौ वन आया
भृंग गुंजन पुष्प पराग हरित तरु कुसुमित पल्लव छाया
वन सरोवर सरिता गिरी गुंजित वेणु स्वर कृष्ण ने सुनाया

प्रीत भरी गीत भरी वेणु धुन मिलन तृष्णा श्रीहरि से बढ़ी
आली कहे मतवाली श्याम गुण रूप प्रभाव मन से गढ़ी
चर्चा करि वेणु स्वर की ज्यों ही भूली ध्यान हुई अज्ञान
चित्त ले गयी चित्तचोर समीप असमर्थ भई खोय ध्यान

ग्वाल बाल संग गोपाल प्रवेश करें गोपवन गो चारण को
कहे सखी सुन लोचन सुख देख सकूं मैं निज प्रभु तारण को
सफल जीवन हुआ देख श्याम राम बजा वेणु चले वन को
अधर वेणु भर प्रीत चितवन चली हुआ 'इंदु' स्पंदन तन को

89

वाह्य तिमिर दूर करूँ जीवन में यह चाह लिए
जग उजियारे को मैंने दीप कई जला दिए
कोई चाह नहीं हृदय बची बाकी उजालों की
परवाह नहीं मुझे यहाँ कोई जग वालों की
गोविन्द की शरण में आना है
अब तो अंतस दीप जलाना है
सागर तट बैठ बैठ गोते कई लगा चुका
गर्जित मेघ वर्षा में कई बार नहा चुका
किनारों को छोड़ भव ज्ञान की भी न कोई चाह
ज्ञान मेह में नहाने की दिखा बस मुझे राह
प्रीत सागर में डूब जाना है
अब तो अंतस दीप जलाना है
यह देह प्रकृति के त्रिगुणों से रचित भोग चुका
सांसारिक सुखों से दुखी इच्छा को रुका रुका
अब सप्त तापों से निस्तार की चाह लिए हूँ
मोह विषय भोग से उद्धार की चाह लिए हूँ
कितने पल अतिरिक्त गँवाना है
अब तो अंतस दीप जलाना है

90

विभाषित विद्युत द्युति सम पीताम्बर लावण्यवान है
वारि युक्त सघन घन शोभित मेघ तनु दृश्यमान है
वक्षःस्थल वनमाला शोभित चरणयुगल अरुणतेज
वारिजा अक्ष रमापति कर रक्ष सुवासित गन्धेज

आनन अलकावली घुँघराली घिर सुंदर बनाए
मणि युक्त रत्न मौली सोह कपोल कुंडल सजाए
कंठ शोभित उज्ज्वल हार, केयूर कंकण रच रहा
मंजुल किंकणी, मंजुल मूर्ति, श्री माधव नमन सदा

धेनुक अरिष्ठासुर आदि का कर अनिष्ट अरि मर्दन
केशी कंस का वध कर, कलिंदी तट वेणु वादन
पूतना कोप भाजक, कालिया दर्प संहारक नमन
अर्कजा तट विहारी गोपाल रक्षा कारी नमन

91

विरहानल में यूँ जली, जैसे जले पतंग
श्याम पिया बैरी भया, नस नस लगी अनंग

पिया मोसे कैसो किये जायें छल रे
छोड़ मुझे है काहे दृग से ओझल रे
पिया मोसे.....

जनम जनम की प्यासी विरहणी मैं तो
विचरु बावरी सी चंचल हिरणी मैं तो
वन वन ढूंढ़ी देखी नैनन हर पल रे
पिया मोसे.....

माया वन में मिरग सो मन मेरो भयो
मक्कड़ जाल संसार सारो वन रह्यो
टूट्यो प्राण पिंजरों, छुट्यो कलकल रे
पिया मोसे.....

राग द्वेष के कलुष मेघ छाये वन में
मोह लोभ मत्सर बरसे गहरे घन में
माटी की काया धंसी गहन दलदल रे
पिया मोसे.....

नैना तोसे लगाय के मस्त मैं चली
काल अलि बन्यो, कली पस्त में ढली
'इंदु' तन पिया बिन तड़पे है हर पल रे
पिया मोसे.....

ऊंच नीच की नैया मेरी पार करो
पिया तू बड़ो खेवैया उद्धार करो
'इंदु' अरदास तू करदे आज सुफल रे
पिया मोसे.....

92

विश्व के पालनकर्ता दयानिधान कृपालु नमन आपको
मत्स्य रूप धार तारिणी पृथ्वी बना मिटाया पाप को
शूकर बन भयानक दानव हिरण्याक्ष से पृथ्वी बचाई
चार वेद शुकदेव सनकादिक सब ने यह बात बताई

गोविन्द मुरारि कच्छप रूप धर सागर मंथन को आये
पीठ रख मंदराचल चौदह रत्न जलधि मंथन से पाए
अति बलशाली नृसिंह रूप धर धर्म मर्यादा को बचाये

मनुष्य मुनि सिद्ध देव के त्रास हिरण्यकशिपु मार गिराए

वामन रूप में आ राजा बलि से तीन पैर मांगी धरा
नाप ली सृष्टि और बलि को पाताल राज दिया सम्भला
दे दिया इंद्रलोक बचा इंद्र को देवों के कष्ट हर लिए
परसुराम क्षत्रिय दम्भ को चूर करने परश निज कर लिए

बीस भुज दस शीश खंडन चंड वेग सायक राम नमन है
भक्त के कार्य हेतु भूमि भार हरण लिए अवतार नमन है
वृष्णि कुल जन्म ले राधारमण कंस हन्ता मुरार नमन है
बुद्ध कलि अवतार जन कल्याण कारक सरकार नमन है

93

शंख चक्र कृपाण त्रिशूल मैया के हस्त शोभित हो रहे
सिंह स्कन्ध आरूढ़ा त्रिनेत्र जिनके भाल भासित हो रहे
ले सद्धि की आकांक्षा हर नर आपका वन्दन करते हैं
श्री अंग श्याम मेघ वर्ण आभायुक्त जया नमन करते हैं

आपके ये रक्ताभ कटाक्ष भय ग्रस्त शत्रु को करती हैं
आबद्ध चन्द्र रेखाएं मस्तक पर शोभित हर्ष भरती हैं
वर्णन कर बल प्रभाव का शेष महेश ब्रह्मा भी अघाते
हे चण्डिके सम्पूर्ण विश्व कल्याण को हम तुझे रिझाते

त्रिगुणात्मक रूप माते दोष नहीं कोई फिर भी आपमें
अंशभूत आदिभूत अव्याकृता परा प्रकृति जग जाप में
मोक्षप्राप्ति का साधन अचिन्त्य महावृता माता भगवती
शब्दात्मिका निर्मल ऋग यजुर की उद्गीथ मनहर पाठ प्रति

मातेश तुम्ही मेधाशति तुम्ही दुर्गम भव तारिणी दुर्गे

कैटभ नाशिनी श्री हरि वक्ष निवासिनी भय हारिणी दुर्गे
तुम्ही शशिमौली प्रिया गौरी सस्मित मन्द हास मुख शोभित
कनक कांति कमनिय कलादक्ष महिष देख हुई आप क्रोधित

जयति जयति मात अम्बे चण्डिके महिष मर्दिनी नमस्तेतु
देवि प्रसीद भव जग अभ्युदय करो नमामि देवि नमस्तेतु
दुर्गे आपकी स्मृति मात्र समस्त भय दूर करे जननि नमः
'इंदु' पर कृपा करो दया करो शूल पहिमाम अम्बिके नमः

94

शिशिर रात्रि की शीतता जब कालिमा ले गहराती है
काले अलि गुंजन करते हैं जब पिक कूक सुनाती है
काले मधुकर श्याम तब याद तेरी खूब सताती है
निहार मृग नयन नैनों से अश्रु धार बहे जाती है

कालिंदी तट पर शितानिल सुरभि सौरभ बिखराती है
मध्य निशा में चपल चांदनी जल नर्तन कर जाती है
अंतस पीयूष स्पंदित होकर धम ध्वनि शोर मचाता है
गोविंद तुझे याद कर मन मेरा बहुत घबड़ाता है

नील नभ की नव आभा से जब ब्रज प्रभासित होता है
चिर नीरव परिपेक्ष्य को शांत चित्त मस्तिष्क सोता है
कृष्ण तेरे दर्शन को यह उर प्रेम विह्वल खोता है
नंद दुलारे तुझसे मिलने को 'इंदु' हृदय रोता है

95

श्याम तुम्हारे दरस जो व्याकुल कोपल तरु पर शकुन्त हैं
निर्निमेष नयनों से पी रहे सुधा वे खग तो ऋषि सन्त हैं

मोहनी गीत त्रिभुवन मोहक वेणु संगीत सुनते कानों से
धन्य हैं खग चितवन श्याम की हृदय बसा रमते मानो वे

सखी देव खग गौ की बात हटा ये चेतन जीव हमारे
सरिता तो जड़ है देख भँवर को श्याम संग मिलन पुकारे
मिलन वेग से रुका प्रवाह जब से सुनी तान बांसुरी की
निज तरंग रोक चढ़ा रही ये कमल धर चरण मुरारी की

नदियां इस धरा धाम की स्थायी हैं पर जलद तो अन्य है
व्रज कुमार संग बलराम का गौ चारण हर्षद अनन्य है
संग संग बज रही वेणु मधुर उमड़ती प्रीत रस धार है
बादल बन छतरी छाते उन पर आतप में बन बहार है

बून्द बून्द जब बरसने लगे लगता सुंदर पुष्प धवल हों
ग्वाल बाल संग दो भाई पर न्योछावर जीवन सकल हो
प्रेम धरा पर प्रेम रस सिंचित बंट पूर्ण रूप माधुरी रही
'इंदु' जीवन अर्पित हो रहा जड़ चेतन सब बांसुरी रही

96

श्याम रंग में रंग्यो पंक्षी, तन मेरो मन बिसरावे
कभी या डाल कभी वा डाल, बैठ बैठ प्रभु गुण गावे
वृन्दावन धाम लोटम लोट, श्री कृष्ण चरण रज पावे
श्याम रंग में रंग्यो पंक्षी तन मेरो मन बिसरावे।

काट कलेजों भीतर देख्यो, मोहन की जोत लगावे
माधव की इह लीला न्यारी, जित देख्यो नीजर आवे
निहार निहार नैनन को नित, नैन मोर सुधि नहि पावे
श्याम रंग में रंग्यो पंक्षी, तन मेरो मन बिसरावे।

पिय सांवरे तू दयालु बड़ो, निराली प्रीत या न्यारी
रसिक पिया रस माधुरी तेरी, पाय बजी मुरली प्यारी
अधर-रस पान करा कर 'इंदु', जीवन घट भर भर जावे
श्याम रंग में रंग्यो पंक्षी, तन मेरो मन बिसरावे।

97

हम जीव सदा करते मनमानी
पर तुमसे बड़ा कौन उपकारी
झट सुन लेते हो बातें मन की
कष्ट हर देते भक्तों के मुरारी

न पूजा पाठ आता मुझे स्वामी
न कोई विधि विधान जानता मैं
शुद्ध मन से मनन करूँ तुम्हारा
तुम्हें ही कष्ट हरण मानता मैं

सांझ सबेरे पूजन कर लूं मैं
मेरी तिमिर रात्रि ढल जाती है
सजल नेत्र से दर्शन कर लूं तो
पापों की गठरी तर जाती है

चंचल चितवन दृग नशीले देख
वेणु के अमिय स्वर घुल जाते है
मनमोहन तेरी छवि निरख निरख
पांच विकार स्वतः मिट जाते हैं

कठपुतली से हम जीव जगत में
इसकी डोर थाम रखी आपने
मन हरखावे चाहे दुख लावे

लिख रखा है सब लेखा आपने

पतित पावन श्रद्धालु परब्रह्म
हम मूरख गुणहीन मनन हारी
नाथ तुम पावनी गंग धार हो
गोता ले रहा 'इन्दु' भव तारी

98

हर्ष विषाद के अज्ञान से, दे दो प्रभु ज्ञान हमें
मनुष्य जन्म के अभिमान से, मिले प्रभु निदान हमें
काल की परिस्थितियों से हम, निज काल समझ जाएं
भौतिक जग की असत्यता की, दुर्नीति समझ पाएं

राम जग में ब्रह्म व्यापक है, हो इसका भान हमें
मनुष्य जन्म के अभिमान से, मिले प्रभु निदान हमें
न्योछावर सर्वस्व कर दिया, नित्य अंतरात्मा पर
सम्पूर्ण विश्वास ले आया, दैविक परमात्मा पर

धीर बना दुःख भुला स्वामी, दे दर्शन दान हमें
मनुष्य जन्म के अभिमान से, मिले प्रभु निदान हमें
परमानंद पाए 'इंदु' भी, मिले प्रभु अपान हमें
मनुष्य जन्म के अभिमान से, मिले प्रभु निदान हमें

99

हे गोविंद! हे गोपाल!! कृपा करो।
कृपा करो चित्त शांत निर्मल सा हो,
कृपा करो जग स्वामी मम पाप हरो।
मेरा स्वभाव अशिष्ट शूल सा चुभे,

परब्रह्म प्रभु सर पर दया हाथ धरो।।

नागफनी कांटे चुभ हृदय में रहे,
निकाल कांटों को कल्मष दूर करो।
विश्व त्रस्त गहरी सहेज वेदना रखी,
पधार शीघ्र जगत्पति जग कष्ट हरो।।

या तो आ शरण मुझे ले लो अपनी,
या मुझको पापियों की श्रेणी धरो।
मैं नादान छल कपट से भरा हुआ,
मुझ पापी को भवसागर पार करो।।

घने कोहरे से लिपटा है जीवन,
हटा धुंध नाथ मुख मुस्कान धरो।
अक्सर प्रतिपादित अनुभूत आदतें,
आदतों में बदलाव शीघ्र आ करो।।

चरैवेति चरैवेति कर्मम धर्मम,
रमणबिहारी मम हृदय पटल निखरो।
स्मृति मानस 'इंदु' उत्थान निर्विवाद,
अहर्निश संज्ञान ले सुप्त मन उभरो।
हे गोविंद! हे गोपाल!! कृपा करो।।

100

हे परम पिता परमेश्वर दे मानव जन्म किया कृतार्थ
सद्कर्म के लिए व्यय करूँ दी जीवन पूंजी तदार्थ
व्यर्थ व्यय कर डाला हमने पूंजी का भाग अधिकांश
आमोद में प्रमोद में और यौवन खेल में चतुरांश

जीवन मिला जन कल्याण को धर्मिता सत्य प्रभास को
मानस शुचिता पवित्रता को मानवता के विकास को
अंतस के तमस में करूँ प्रवाहित आलोक प्रकाश को
दुर्गुणों को दूर कर करूँ संचारित नवल आस को

जिस कार्य हेतु जन्म मिला प्रभु रह गया वह तो अधूरा
नाथ सद्बुद्धि दे सुधार कर लूं परमार्थ कार्य पूरा
एक लक्ष्य हो मानव हूँ मैं, मानव ही मैं बना रहूँ
पाया जीवन जिस हेतु 'इंदु' उससे ना अनमना रहूँ

101

हे कृष्ण कन्हाई कुंजबिहारी केशव कमलकांत किशोर
कालिंदी कदरी काटी काट्यो कालिया को गर्व कठोर।

हे नटवर नागर नटखट नंदलाल नारायण नवलकिशोर
नैन नशीले नखसिख नखराले नूतन छटा करे निहोर।

हे मुरली मनोहर माधव मधुसूदन मोहन माखनचोर
मचाये धूम मनोहारी मुरली, मोहे मोहक मन मोर।

हे राधारमण रसिक बिहारी रसिया रंगलाल रण छोर
रास रचाए रात भर रस माधुरी पिला करे सराबोर।

हे छैल छबीलो छलिया 'इन्दु' छनछन छके छटा विभोर
छले और छल छल छोड़े छूटे भव कोई न तेरो छोर।

हे गीता गीतिका गायक गोविंद गोपाल गुण चकोर
गोवर्धन गिरधर गुणवंत गलवैजयंती नमन चहूँ ओर।

102

हे नाथ जगदीश्वर भृंग हो, या नीलकण्ठ विराट हो
इन सब पक्षियों में आप हो, जग के विशाल ललाट हो
चमकते बादल भी आप हो, ऋतु के सागर सम्राट हो
अपरा प्रकृति के त्रिगुण स्वामी, अज्ञान के ज्ञान पाट हो

सम्पूर्ण सृष्टि के सृजक आप, जड़-चेतन के हो दृष्टा
प्रकृति के स्वामी आप ही हो, आप ही जल थल अभिष्टा
अपरा के पश्चात परा बना, त्रिरंगी पदार्थ छाट दो
अपरा प्रकृति के त्रिगुण स्वामी, अज्ञान के ज्ञान पाट हो

जीव बने भोगे अपरा से, कर्म बने कर्म फल मिले
ज्ञान इतना दीजिये स्वामी, न रहें प्रकृति वश सिलसिले
बन्धन मुक्त कीजिये प्रभु जी, सार ले छोड़ू झंझाट को
अपरा प्रकृति के त्रिगुण स्वामी, अज्ञान के ज्ञान पाट हो

वृक्ष पर दो मित्र खग रहते, ज्यूँ मित्र भावना उनमें
एक लेता स्वाद फल का, एक मात्र देखे उसमें
जीवात्मा परमात्मा बसते, जीव कर्म का भोग भाट को
अपरा प्रकृति के त्रिगुण स्वामी, अज्ञान के ज्ञान पाट हो

103

हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल
दिवस का अवसान हुआ चाहता है नूतन अर्चन अविरल

गगन पर मेघ का अवमान हुआ चढ़े मेघ पर मेघ घुमड़
जीवन पृष्ठ की व्यथा कथा बतलाने को मेघ रहे उमड़
तम की गहन कालिमा वृहत फैल चुकी है रूठे देव ऋत

देकर प्रकाश कर दे इस गगनाच्छादित कलुष को अनावृत

ईश दे नूतन आवरण दे नूतन दुकूल परिवेश नवल
हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल

नव जीवन का होगा आगमन व्योम नाद का हर्ष होगा
सिंचित नवालम्ब होगा भावनाओं का उत्कर्ष होगा
नवल भानु द्युति लिए उदित होगा क्षितिज अरुणिमा छाएगी
ढोल बजा खुशियाँ मना ‘इंदु’ देह अंतिम अर्घ्य चढ़ाएगी

संसृति सम्मोहन से निःसृत जीव खिलायेगा आत्म कमल
हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल

104

हे प्रभु मैं सुन कर सुनता हूँ, हर बार देख कर देखता हूँ
जीवात्मा रूपी स्व-संस्कार, विषय सपनों में सेंकता हूँ
भिन्न भिन्न स्थल में जो देखा, वह मैंने अनुभूत किया है
पुनः पुनः कर अनुभूत उसे, भिन्न भिन्न भाँति ही जिया है

भली भाँति सोचा समझा सुना, विवेचित सत्य असत्य ही है
मन के जो अधीन है उसमें, उदान वायु का कृत्य ही है
तब स्वप्न घटित घटना मन से, मैं कदापि नहीं देख सकता
मुझे सुषुप्ति सुख का ज्ञान हो, भोग्य स्थिति सर्वदा रखता

ज्यूँ गगन में विचरते पक्षी, रात्रि आ वृक्ष निवास करते
वैसे ही बंधे तत्व स्वरूप, जीव आपके आश्रय रहते
पृथ्वी को पृथ्वी की मात्रा, जल को रस की मिलती मात्रा
वायु गगन को स्पर्श शब्द की, तेज से तेज की तन्मात्रा

नेत्र दृश्य पदार्थ की मात्रा, कर्ण को श्रोत्रिय विषय मात्रा
नासिका को सुगंध, जिव्हा, त्वचा स्पर्श स्वाद की तन्मात्रा
वाणी, शब्द, हस्त वस्तु रहे, उपस्थ विषय रहे स्वामी
'इंदु' मन बुद्धि को चित आश्रय, सर्वदा तन्मात्रा प्रणामी

105

हे गोपाल! हे नंद लाल! मुरलिया वाले आजा
हे गोविंद! हे मुरली धर! मुरलिया वाले आजा।

आई रुत प्यारी प्यारी, छाई घटा कारी कारी
फूल खिले क्यारी क्यारी चली है पवन मतवारी
तट कालिंदी के आजा, झूला झूलाऊँ आजा
नन्दलाल मेरे आजा, श्याम मधुर रास रचाजा।

तू मुझ में खोये मैं तुझ में, इक दूजे को भूलें
मोहे कदम्बन की छांव, मोहे सावन के झूले
तू छेड़ बांसुरी की धुन, ऐसी जो 'इंदु' मन छुले।

मेघ मल्हार की तानें रागिनि पावस की गा जा
हे गोपाल! हे नंद लाल! मुरलिया वाले आजा
हे गोविंद! हे मुरली धर! मुरलिया वाले आजाा।

106

हे प्रभो इतनी कृपा कर दीजिये
शीश मेरा चरण में धर लीजिये
दीजिये इस पाद रज को माथ पर
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

स्वयं करता स्वयं गौरव गान मैं

नाथ करता मात्र निज अपमान मैं
आप केवल घेरते ही घेरते
मृत्यु मेरी आप पल पल उलिझिये
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

स्वयं अपना तो प्रचार न नाम हो
आपके द्वारा हमारा काम हो
आपकी इच्छा करो पूरी यहाँ
समर जीवन मध्य शांति सिंचिये
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

दो मुझे आ शांति चरम प्रभो सदा
दो मुझे आ कांति परम प्रभो सदा
आ खड़े हो पास मेरे लो उठा
दे सहारा उर कमल में रीझिये
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

107

हे देव दिवाकर कर दो शिशिर निशा काल का अंत
कर उज्वल गहन गिरि कानन में श्यामल गगन पर्यंत
तमतोम को प्रकाश पुंज से परिष्कृत कर दे ईश
प्राची के महाद्वार से सप्ताश्व रथ लिए आ रविश

चेतन कर दो प्रभु भावनाओं के अथाह प्रवर को
शितानिल सहलाये कपोल अंतस क्षितिज गह्वर को
स्वप्न स्नेह के छूटे किरणों के चैतन्य कोष से
सुदूर किनारे देव देखे खोले नयन रोष से

प्रतिकर्षण चालित समीर छू लेगी हमें अन्यतम
मलयानिल सुरभि का अभिसार ले लूँ मध्यम मध्यम

प्रियतम सित प्रभा को आत्मसात करूँ तेरा होकर
आरम्भ से ही गोचर रह कर भी रहे प्रभु अगोचर

108

हे नाथ सृष्टि के स्वामी और स्वयं आप ही हो विधाता
आप ही संकल्प रूप तप से रची सृष्टि के हो निर्माता
नाथ रच सृष्टि आपने प्राण के शक्ति तत्व को किया प्रकट
सब के सामूहिक संग्रह से बहुरूप सृष्टि बनाई विकट

आदित्य देव प्राण तत्व हैं, सूर्य ही पोषण जीवत्व का
रच कर देव चन्द्रमा किया आपने पोषण स्थूल तत्व का
पंचभूत का निर्माण ही प्राण जीवन शक्ति का कथ्य है
इन सब तत्वों से मिलकर ही बना यह जगत यही सत्य है

नाथ ज्यूँ रात्रि बीतने के पश्चात् सूर्योदय होता है
ज्यूँ सूर्योदय देख कर जीवन में नव-संचार बोता है
भानु प्रभा जग में फैल सूर्य को प्राण बना जीवन देती
हे नाथ 'इंदु' जीवन को भी उजास कर यह प्रशमन देती

परमेश जीव मात्र के शरीर में जठराग्नि जो रहती है
प्राण रूप में वह सूर्य स्वरूप ही है यह श्रुति कहती है
सब का आधार प्रकाश का केंद्र सूर्य है सर्वज्ञ तपते
वे सहस्त्रों की सहायता करते फिर भी जड़ से रहते

सहस्त्रों किरणों को प्रभासित कर, जीवन का प्राण सूर्य है
दे जीवन में प्रकाश सर्वदा इस जीवन का त्राण सूर्य है
संवत्सर आपका ही रूप, दो अयन से यह बना जानिए
उत्तरायण, दक्षिणायन, प्राण एवं रचना रूप मानिए

चन्द्र आवृति पहुंचे धरा तो दक्षिणायन कहलाता है
मृत्यु एवं जीवन के पुण्य फल को यह अयन बतलाता है
इस अयन में सकाम भाव से भोग्य वस्तु हेतु तप करूँ मैं
सम्पदा रूप में सफल रहूँ कामना वाले ऋषि को धरूँ मैं

109

हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा!
भवसागर नैया डूबी, दिखता कोई न किनारा
मोहन मेरे उबार ले, देकर तुम मुझे सहारा
हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा!

खोटे मेरे कर्मों में, तकलीफ के तुम सहायक
तुम्ही हो मेरे खिवैया, तुम्ही मेरे लोकनायक
लोकनायक तेरा रूप, है कितना सुन्दर न्यारा
हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा!

मूंदें नयन दर्प से मैं, ढूंढूं राह अँधकार में
अहं की ठोकरें खा मैं, करहाया अंधकार में
आ तुम्ही ने श्याम प्यारे, किया दूर अँधियारा
हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा!

द्वेष दंभ लोभ मोह में, बन्ध कर मैं लड़खड़ाया
धनोपार्जन करता रहा, जीवन को व्यर्थ गँवाया
दिया सहारा तूने जब, दिग्भर्मित था जग सारा
हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा!

संध्या बेला आई तब, याद बहुत मुझको आया,
नवल वस्त्र की तैयारी, नव भोर ढूंढ़ मैं लाया
'इंदु' दे दे अँतिम अर्घ, कर अँतिम नमन तुम्हारा,
हे गोविंद! हे गोपाल! जग में तू ही है प्यारा!

110

हे अनुपम तेजोमयी जगद्धाता
आभाषित तेज की तू है प्रदाता
तेरी आद्य शक्ति का हो मुझे भान
कोमलता सा हो कोमल मुझे ज्ञान
निरख निरख तुम्हारे मुख मंडल को रहूँ सदा प्रफुल्लित
कोमल केशों में समाहित सुरभि संग कर मुझे सुरभित
ज्ञानोदय मेरे मस्तिस्क में हो आभास दे दे माँ
तेरे ललाट का विराजित देदीप्य प्रभास दे दे माँ

कमल-नयन तेरे कर ज्योत प्रवाहित
हो रहे मेरे हृदय पटल प्रवेशित
चक्षु विनय-अनय की जानें भिन्नता
ज्वलित तेजोमय प्रकाश की तीव्रता
दसों भुजाएं अस्त्र-शस्त्र से शोभित दस दिशा बता रही
शरण तुम्हारी मुझे विपत्ति का अग्रिम भान करा रही
करुण बनूँ दीन-सेवक बनूँ यह शक्ति प्रकाश दे दे माँ
तेरे ललाट का विराजित देदीप्य प्रभास दे दे माँ

भयभीत कर रहा यह केहरि गर्जन
उद्वेलित है करने को अरि मर्दन
अवर्णिनीय चरणों में स्थान दे दो
शत्रुओं का विनाश कर प्राण दे दो
भक्तिमय आनन्दमय हो वंदना क्षण प्रति क्षण कर सकूँ
मुझे शक्ति दे, मैं आंतरिक कुत्षित विचारों से लड़ सकूँ
तेरे वक्षस्थल की करुणित भक्ति का भास दे दें माँ
तेरे ललाट का विराजित देदीप्य प्रभास दे दे माँ

111

हे गुरुदेव कृपया ब्रह्म मर्म का ज्ञान लक्ष्य दीजिये
यथोचित संभव विद्या जो जाननी है व्यक्त कीजिये
मैं अभिलाषी मुझे सर्व ब्रह्म ज्ञान अतिरिक्त दीजिये
सुन सुनाऊँ सदा ब्रह्म विद्या मुझे अभिसिक्त कीजिये

परम पिता ब्रह्म आपको लक्ष्य मैंने सर्वदा माना
प्रभु आपके सानिध्य में निष्काम तप दम भाव जाना
वेदों के धर्म का जागरण स्वभाव का आचरण माथ
मान कर चाहूँ मैं असाध्य ब्रह्म ज्ञान कृपा करें नाथ

हे प्रभो उपनिषद रूपी विद्या आत्म तत्व से समृद्ध
कर्म चक्र संग आबद्ध आवागमन चक्र से निषिद्ध
पाप पुण्य से परे प्राप्त हो मुझे इतनी कृपा कीजिये
'इंदु' नमस्कार कर रहा नाथ मुक्त भव दशा कीजिये

112

हिवड़ो मेरो झूम झूम, अब आनंद मनावे
मन को कल्मष दूर हुयो, गीत प्रीत को गावे
कृपा हुई ऐसी गुरु की, उर सागर हरसावे
हिवड़ो मेरो झूम झूम, अब आनंद मनावे।

प्रीत जोत अंदर जलाय, कियो अनुपम प्रकाश
द्वेष राग सब छाड़ि दियो, जागी जीवन आस
कदम कदम राम नाम की, अब मस्ती लहरावे
हिवड़ो मेरो झूम झूम, अब आनंद मनावे।

चरण शरण मन शुद्ध हुयो, तन की भागी पीर

हिरदय 'इंदु' के आय जब, बस्यो प्रभु रघुवीर
नाचे गावे मलंग बन, उमंग खुशियाँ लावे
हिवड़ो मेरो झूम झूम, अब आनंद मनावे।

113

सखी निरख आनंद वर्धन करते शीलवान हरि रूप को
स्वर्ग देवियां सुन सुन वेणु के चित्र विचित्र सुर अनूप को
सुध बुध खोती मूर्च्छित होती श्याम मिलन की अभिलाष लिए
वेणी गुंथित पुष्प कब गिरे कब वस्त्र भूल आयी आस लिए

सखी कहे देवियों की बात छोड़ गौ की देखो शान है
कृष्ण वेणु स्वर से ये दोनों कर्ण खड़े कर सुनती तान हैं
गौ पी रही सुधा रस उड़ेल उड़ेल बंशी की तान से
बता सखी होता क्या ऐसा सम्मोहन मोहन के गान से

नयन द्वार से विराजती हैं हृदय पटल पर छवि मनहर की
आलिंगन करे अश्रु विसर्जित करे मन के संग प्रखर सी
स्वतः झरे दुग्ध पर वत्स मुख का दूध भी न पान कर सकें
श्याम वेणु गज़ब ढाए 'इंदु' की कलम वर्णन कैसे करे

114

सत्य चित्त आनंद का परम हंस परम ज्ञान ईश हैं
स्मरण करो आत्मतत्व को स्फुरित होता उर अहर्निश हैं
अज्ञानातीत पूर्ण तेजोमय परमेश्वर ज्ञात हैं
प्रातः वन्दन है प्रभु को जो सर्व स्वरूप जग व्याप्त हैं

देव देवेश्वर अच्युत आदिपुरुष प्रात नमन तुझे है
मन वाणी से अगम्य है जो नेति नेति सब कहें हैं

संसार रज्जु में विषधर की भांति प्रति भासित प्राप्त हैं
प्रातः वन्दन है प्रभु को जो सर्व स्वरूप जग व्याप्त हैं

स्वप्न सुसुप्ति जाग्रत अवस्थाओं का ज्ञातव्य नहीं है
स्फुरण रहित ब्रह्म का पंचभूत सार मन्तव्य नहीं है
'इंदु' त्रिश्लोक त्रिलोक के भूषण हैं नमित पर्याप्त हैं
प्रातः वन्दन है प्रभु को जो सर्व स्वरूप जग व्याप्त हैं

115

सप्त श्वेत तुरंग रथ आरूढ़, देव प्रभाकर नमन तुझे
कर मध्य श्वेत सरोज धारक, नाथ दिवाकर नमन तुझे
प्रचण्ड तेज पुंज तेजस्वी, कश्यप कुमार नमन तुझे
आदि देव हिरण्य रूप ब्रह्म, चेतस प्रसार नमन तुझे

लोहित रोहित स्यंदन आरूढ़, सर्वलोक हितकारी रवि
महापाप हारी जग रक्षक, चतुर्दिस द्युतिस तेज छवि
त्रिगुण रूप त्रिगुणात्मक भास्कर, महावीर सूर्य पापहर
तेजपुंज वायु नभ रूप प्रभु, तेजोमय सूर्य तापहर

रक्तपुष्प सा रक्त वर्ण ले, रक्त हार कुंडल लालित्य
एक चक्रधारी भानु भास, प्रणाम तुझे हे आदित्य
सर्व प्रकाशक सर्व प्रवर्तक, प्रभु सर्व कल्याणकारी
विश्वात्मा जीवात्मा कारक, 'इंदु' अंतस अभय कारी

116

सर्व दाता सर्व ज्ञाता सर्व व्यापक है
सर्व सुख हैं प्राप्त जीवन सर्व आभा गर्व है
अग्नि तेजस में विराजित कर्म सब बतलाइये

कर्म ही कर्तव्य हो दृढ़ प्रगति मार्ग सुझाइये

सद्गुणों को नित करें उत्पन्न ये सब प्राप्य हो
लोभ माया वासना जो आ बसी मन त्याज्य हो
स्नेह पाऊँ बुद्धि धन भी श्रेष्ठ हो यह शक्ति दो
हृदय दुर्बल हो न स्वामी ज्ञान दाता भक्ति दो

दुर्गुणों को दूर कर मैं आपकी आऊँ शरण
ज्ञान दे दो 'इंदु' बैठा पकड़ स्वामी के चरण
आपके हूँ निकट प्रभु मैं दूर मत अब कीजिये
हाथ मेरे सर रखें प्रभु कष्ट सब हर लीजिये

117

संबंध स्वार्थ निहित हो गए, कलुष तत्व से ग्रसित हो गए
घोर अनाचार छा सताये, ताप त्रय से दूषित हो गए

तारे भी बादलों के तले, आ तमस से कलुषित हो गए
अहंकार-मद पर सवार हो, अज्ञानता से निहित हो गए

धर्म भी निज स्वार्थ प्रज्ञा से, अनिमेष परिभाषित हो गए
सत्ता लोलुप निज हित खोये, जनहित छोड़ शापित हो गए

मनुज मनुज के तन का भूखा, दया धर्म अरक्षित हो गए
आ महादेव सम्भाल जगत, नाथ तुझ पर आश्रित हो गए

'इंदु' बना मनुष्य को मनुष्य, आज मनुज संकुचित हो गए
गरल का विषपान कर शम्भो, नीलकंठ सुशोभित हो गए

118

संकल्प शक्ति दो जीवन को, खोल दे मन की अर्गलायें
ऐ एकाकी जीवन मेरे, उन्मुक्त कर मुक्त प्रार्थनाएं

विषधर केचुली लपेटे है, चित्त लिए गरल कामनाएं
अव्यवस्थित हृदय ढूंढ़ रहा, ज्योतिर्मय सतत कल्पनाएँ
नम नयन प्रभु नित्य देखेंगे, छद्म अंतःकरण वर्जनाएं
संकल्प शक्ति दो जीवन को, खोल दे मन की अर्गलायें

कितना एकाकी मन उन्मन, नभ पर सूरज अस्ताचल को
देख झांक दूर झुरमुटों से, वीरान हुए रोशन पल को
ईश्वर तो अनादि अनंत है, सुप्त केवल हैं भावनाएं
संकल्प शक्ति दो जीवन को, खोल दे मन की अर्गलायें

धीरे धीरे अँधेरा छा रहा, बड़ी अंदर कुटिल क्रीड़ा है
नीरव शांति नयन ऊपर है, अंदर तूफानी पीड़ा है
अधर कम्पित देह लज्जित है, अंत कर उठती वासनाएं
संकल्प शक्ति दो जीवन को, खोल दे मन की अर्गलायें

कब आओगे निर्मोही प्रभु, पीड़ित 'इंदु' को संभालने
विनत नयन आचमन कर रहे, आ प्रेम सुधारस डालने
मंदिर आनन अनंत हर्ष दे, दर्शन को अब शिशु इठलायें
संकल्प शक्ति दो जीवन को, खोल दे मन की अर्गलायें

119

सामर्थ्य कहाँ मुझमें इतनी, कर सकूँ ब्रह्म का वर्णन
यह वाणी इतनी प्रबल कहाँ, करूँ किंचित का चित्रण
ब्रह्म तत्व तो है वाणी से, ब्रह्म तत्व अतिशय अतीत
प्रेरक ज्ञान प्रवर्तक जो है, वह वाणी से है प्रतीत

स्वामी पर ब्रह्म स्वरूप आप, मन, बुद्धि सब से परे है
इतनी मन शक्ति कहाँ मुझमें, ब्रह्म तो भाष्य से बड़े है
ब्रह्म शक्ति से मन समर्थ है, चिंतन अहम के मनन की
बुद्धि मन में तो दो सामर्थ्य, ब्रह्म मीमांसा कथन की

जगत तो दृष्टिमान बनाया, बना दिए दृश्य दृष्टव्य
दृष्टि नेत्र एक दूसरे के, बनाएं पूरक नहीं गंतव्य
ब्रह्मशक्ति आंशिक दृष्टिअंग, इन्द्रिय से परे अति भव्य
प्रभु आपका ध्यान रहे, 'इंदु' की शक्ति हो कर्तव्य

120

सांध्य अर्घ्य का समय हो चला, हरि स्वीकार मेरी याचना
संचित अधृति भाव इशिता ले, इष्ट अभिगम की कर प्रार्थना
प्रणिधान स्थिति में यह जीव है, शांत नमित करे अभ्यर्थना
प्रसून वल्लरि सज्जित सुरभित, नव भोर की स्वागत कल्पना।

नव दुकूल पहनना है मुझे, करना है पुनः हवन प्रभु
मुक्ति बोध संग पावस रात्रि, मेघ आच्छादित है गगन प्रभु
निश्चल अंतस भक्ति लीन है, ठाकुर तेरी करूँ अर्चना
प्रसून वल्लरि सज्जित सुरभित, नव भोर की स्वागत कल्पना।

शांत चित्त जाह्नवी तट खड़ा, देह करे है अर्पण तर्पण
आरुषि की प्रथम किरण कहती, सब कुछ स्वामी तुझे समर्पण
'इंदु' देह व्यष्टि प्रतीक कहे, समष्टि आत्मा में मिल सजना
प्रसून वल्लरि सज्जित सुरभित, नव भोर की स्वागत कल्पना।

121

सुनो रे मनवा सुमर ले तू राम का नाम
राम जी ही सुफल करेंगे तेरे काम

दो दिन खातिर तूने पायी ये काया
पाप कपट कर कर जोड़ी तूने ये माया
रह जायेगी सारी यहीं इस पर काहे तू गुमान करे
राम जी का नाम एक सहाय यही भव बंधन पार करे

यह जग स्वप्न सुनहरा रह रह खेल दिखाये
जगत मेला क्षण दो क्षण का साधु बतलाये
देख देख कर सुंदर काया काहे तु लाड़ करे है तन का
छूटे सांस बिखर जायेगी देह ज्यूँ माला मनका मन का

लगा ले मन तेरा राम जी के चरनन में
मोह की गठरी छोड़ जप प्रभु गुण जीवन में

'इंदु' कहे राम नाम ही कष्ट हरे तन का मन का जग का
मोह आसक्ति से विरक्ति रहे पुण्य प्रताप मिले स्वर्ग का

122

सुंदरी सूरा और सुरभि सुख को शांत विराम देने को
चतुर्विश्लेशणि वाणी को संयोजित विश्राम देने को
अंतर्मुखी प्रतिभा को निरन्तर नवल आयाम दे पाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उतीर्ण हो जाऊँ

मीमांशा विवेचना स्वतः प्रखर हो परिस्त्रवित हो जाए
प्रभो आत्म मनन कर हृदयंगम परीक्षा मुखरित हो जाए

गतिशील जीवन को समय चक्र से अनुबन्धित कर पाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उतीर्ण हो जाऊँ

कालचक्र नहीं करता व्यक्ति विशेष को कदापि अनुग्रहित
समय बोध तो नित्य लेता है परीक्षा जीवन सम्बंधित
परीक्षाएं देनी हैं जीवन समर में आ रीत निभाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उतीर्ण हो जाऊँ

जिजीविषा की लालसा और महत्वाकांक्षा निज मान की
जीवन कर्म को निर्धारित कर देता आहुति स्वाभिमान की
लक्ष्य दृष्टिगोचर हो तो सब परीक्षाएं सहज दे पाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उतीर्ण हो जाऊँ

मन कर्म वचन को कर संयमित हर सफलता मुझे देना
दृढ़ संकल्प बन जीवन समर में कुविचारों को हरा लेना
मानसिक उद्वेलन को शांत कर 'इंदु' प्रणिधान में बैठाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उतीर्ण हो जाऊँ

123

स्वागत में जिसके हो प्रसन्न
निशा भी कुमुदिनि खिलाती है
जिसके अर्चन को रजनी भी
तारों के दीप जलाती है
उस रसिक बिहारी के दर्शन को मेरी अँखियाँ प्यासी हैं
नितनित गीत बनाता हूँ अलंकृत कविता अधूरी रह जाती है
निशा भी कुमुदिनि खिलाती है।

शरद निशा के पूर्ण चन्द्र में
मनहर जब वेणु बजाते हैं

रूप सलोना नयन कटीले
देख सब मन हार जाते हैं
धुन तेरी बंशी की कानों में सुर सुधा घोल जाती है
बावरी मगन हो हो ब्रज ग्वालन लोक लाज ठुकराती है
नितनित गीत बनाता हूँ अलंकृत कविता अधूरी रह जाती है
निशा भी कुमुदिनी खिलाती है।

अर्कजा तट भर घट ब्रज नार
तरु तमाल झांक कर खोजती
सुन तान सुरीली सुध खोई
दृष्टि घुमा विरत वे बोलती
आ जाओ मोहन प्यारे तुझ बिन नींद नहीं अब आती है
निशि सूनी दिन सूना सब सूना तेरी याद रुलाती है
निशा भी कुमुदिनी खिलाती है।

आ भी जाओ रसिया तुम बिन
जीवन सूना सूना सा है
नींद कहाँ चैन कहाँ अब तो
सब कुछ छीना छीना सा है
आकर चैन दिला जिनका पीताम्बर झीना झीना सा है
'इंदु' नैनन में बस श्याम मनोहर की छवि नजर आती है
निशा भी कुमुदिनी खिलाती है।

124

स्वप्न मधुर माधव के खोलें, हृदय की अर्गलायें
ले स्निग्ध गगन तारिका हार, शुभ्र ज्योति मुस्काये

थाम हाथ तुम्हारे बढ़ रहा, करूँगा लक्ष्य प्राप्त
संग तुम्हारा मिल गया मुझे, हुई जग रीति ज्ञात

खोया रहा तेरे स्मरण में, सुख दुख की ले याद
चित्त उद्विग्न आशाएं गहन, मिटे सभी अवसाद

शरण मेरे सांवरे के है, जीयें या मर जाये
स्वप्न मधुर माधव के खोलें, हृदय की अर्गलायें

मधुर नयन मधुर अयन तेरे, मधुर अधर रस पान
मधुर मोहन सस्मित मुस्कान, मधुर वेणु की तान
अनुराग प्रीत मोहक प्रांगण, चहुँ ओर अति उमंग
रजनी संग निशित नील गगन, दृश्य प्रिय श्याम संग

जला दीप शिखा प्रीत स्नेहिल, नव प्रभा जगमगायें
स्वप्न मधुर माधव के खोलें, हृदय की अर्गलायें

आरोहण अनुभूति स्वर्ग की, परम शांत है सोच
मार्ग कंटक दूर हो जाये, ना कोई संकोच
माणक कंचन अभिव्यक्ति है, मन उठता उद्वेग
अरुणिमा छाई क्षितिज मनहर, मनोहर मनोवेग

नटवर नवलकिशोर निरंजन, नव रूप कल्पनाएँ
स्वप्न मधुर माधव के खोलें, हृदय की अर्गलायें

नव छंद नव गीत मेरे हैं, नव प्रयास संज्ञान
सीमित शब्द हैं कीर्ति अपार, किस विध हो गुणगान
कुमुदिनि कर्दम मध्य खिल रही, करके मन को स्वच्छ
स्वामी पूरक ‘इंदु’ के बनो, आकर तुम प्रत्यक्ष

मोहन आलम्बन तुम मेरा, बने पुनीत ऋचाएं
स्वप्न मधुर माधव के खोलें, हृदय की अर्गलायें

125

क्षत क्षत क्षरित देह रोग ग्रस्त, वेदना कीजिये निस्तार
आनंद कोष अनुभूति लिए, आनंद का करिए प्रसार
अन्नमय कोष में बिन्धित खग, अम्बर उड़ता कितना तेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

भवबन्धन मुक्ति आशा लिये, नित्य ही शरण गहुँ सरकार
बाधित करें ये वासनाएं, बिन पंख उड़े व्योम अपार
जिजीविषा बड़ी हठीली है, प्राण भूत प्राणकोष भेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

नियति पारितोषिक स्वीकृत है, निष्पादित चेतना अशांत
हृदयंगम विस्फोटित भावना, क्षतिपूरित करती सकलान्त
नट नटीली रस रसीली है, लावण्यमयि सनसनीखेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

दिगउद्घोष नाद प्रणव लिए, परिलक्षित है नूतन भोर
जीवित त्रासदी व्यापक रोष, सर्वत्र है भयावह शोर
प्रभो 'इंदु' पर कृपा कीजिये, अध्यात्म ज्ञान रखूं सहेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज